@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

ISSN : 2581-9208

माही संदेश

चाहे जो हो धर्म तुम्हारा
चाहे जो वादी हो।
नहीं जी रहे अगर देश के लिए
तो अपराधी हो।
भले विचारों में कितना ही अंतर
बुनियादी हो।
जीवन का है अर्थ तभी तक
जब तक आजादी हो।

-उदयप्रताप सिंह

वर्ष : 2 अंक : 5 अगस्त : 2019 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह का जन्म शताब्दी वर्ष

जयपुर। सप्त शक्ति कमांड में हाल ही आयोजित किए गए लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह के जन्म शताब्दी समारोह के दौरान सप्त शक्ति कमांड के जीओसी.इन.सी. लेफ्टिनेंट जनरल चेरिश मैथसन ने 13 जुलाई 2019 को क्वींस रोड और सगत सिंह मार्ग के जंक्शन पर लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह की प्रतिमा का अनावरण किया। इसमें राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव सहित बड़ी संख्या में भूतपूर्व सैनिकों नागरिकों और गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। झारखंड मोड़ की जगह सगत सिंह चौक का नया स्वरूप दिया गया। 14 जुलाई 2019 को सप्त शक्ति सभागार में एक संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें लेफ्टिनेंट जनरल अभय कृष्ण जीओसी.इन.सी सेंट्रल कमांड मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। सप्त शक्ति कमान लोगों और युवा पीढ़ी को इस महान सैन्य लीडर के बारे में जागरूक करने के लिए प्रत्येक वर्ष लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह पर सेमिनार आयोजित करेगी।

संदेश

भारतीय सेना वीरता और बलिदान दोनों ही शब्दों का मूर्त रूप है । आज़ादी मिलने से आज तक किसी ना किसी रूप में हमारे सैनिक बाहरी और भीतरी शत्रुओं से जूझ रहे हैं और देश की सुरक्षा को सर्वोपरि रखते हुए जिस अदम्य कर्तव्यनिष्ठा का परिचय हमारी सेनाओं ने दिया है वह पूरे विश्व में अद्वितीय है।

राजस्थान की धरती वीर सपूतों की धरती कहलाती है। देश सेवा का जज्बा यहां पीढ़ी दर पीढ़ी खून में बहता है। सप्त शक्ति कमान देश की पश्चिमी सीमा के एक बड़े हिस्से के लिए उत्तरदायी है और मुझे खुशी है कि हमारे सैनिक किसी भी कार्य को अंजाम देने के लिए सदैव तत्पर हैं। भारतीय सेना ने इस वर्ष को 'ईयर ऑफ नेक्स्ट ऑफ किन' के रूप में घोषित किया है और युद्ध के हताहतों, पूर्व सैनिकों और सेवारत सैनिकों के परिजनों तक पहुंचने की योजना बनायी है ताकि उन्हें वित्तीय लाभ, कल्याणकारी योजनाओं और पेंशन से संबंधित समस्याओं को हल करने में मदद मिल सके। सैनिकों तथा उनके परिवार जनों को उनका अधिकार दिलाने के लिए भारतीय सेना रेजिमेंटल केन्द्रों की स्थापना करेगी। इसमें रक्षा मंत्रालय, सैनिक बोर्ड, बैंक तथा कल्याणकारी एजेंसियां मिलकर कार्य करेंगी। हमारे सैनिक और उनके परिवारों का पूरा राष्ट्र ऋणी है और समय आ गया है कि इन परिवारों तक पहुंच कर उन्हें उनके अधिकारों से अवगत कराया जाए।

माही संदेश के सेना विशेषांक ने समाज और सैनिकों के बीच जो कड़ी स्थापित की है वह वास्तव में एक सराहनीय कदम है पत्रिका की पूरी टीम को सप्त शक्ति कमान की शुभकामनाएं।

जय हिंद

लेफ्टिनेंट जनरल चेरिश मैथसन

एक नजर यहां भी

प्रेरणा
लेफ्टिनेंट जनरल सगत की शौर्य गाथा — रोहित कृष्ण नंदन/ ममता पंडित — 6
कर्तव्य
पुलवामा शहीद जीतराम गुर्जर — रोहित कृष्ण नंदन — 9
नमन
एक बार फिर सैनिक बनना चाहूंगा
शहीद कैप्टन विजयंत थापर — रचित सतीजा — 10
'इश्क की अमानत बड़ी भारी होती है सर
इसे साथ ले कर मैं मर नहीं पाऊंगा' शहीद कैप्टन अनुज नय्यर — 11
मन की बात
हुक्म — मेजर (से.नि.) योगेश दहिया — 13
...एक स्वत आतंकवादी के नाम — तनिमा तिवारी — 15
जय हिंद
एक दिन मेरा नाम भी होगा इंडिया गेट पर
शहीद अमित भारद्वाज — विजयलक्ष्मी जांगिड़ — 16
हमारा कानून
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 — शिवकुमार 'अवार' फौजदार — 18
कथा संदेश
सिला — विजेता सूरी रमण — 20
विशेष
देश सेवा से बढ़कर कुछ भी नहीं — ममता पंडित/ दीपक कृष्ण नंदन — 21
काव्य संदेश
कर्नल अमरदीप सिंह की दो कविताएं — 22
ये हमारी जन्नत दिलकशी... — अनुपमा झा — 22
ये धरती मांग रही बलिदान — उषा वर्मा वेदना — 23
यही तो मेरा हिंद है — नित्या शुक्ला — 23
एक फौजी मेरी प्रेरणा — तमन्ना बी कुकरेती — 23
पुस्तक संदेश
पाठकों से बेहतर संवाद करती
'पाल ले इक रोग नादां' — नित्या शुक्ला — 24
सिनेमा संदेश
'ऐ वतन जरा आहिस्ता गुजर' जे.पी.कौशिक — शिशिर कृष्ण शर्मा — 26
सलाम
फिर से मौका मिले तो फौज में
जाना ही पसंद करूंगा — रोहित कृष्ण नंदन — 30

आवरण चित्र - रवि प्रकाश*
आवरण चित्र - स्वप्निल कड़क*

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : ₹ 400
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 11000

चेक **'Mahi sandesh'** (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। **रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर (प्रति वर्ष 250/- रुपए) अतिरिक्त देय डाक खर्च शुल्क भेजें।**

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक : 'माही सन्देश'
खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

लिखते हैं तो स्वागत है...

अगर आप कविता, लघु कथा या सामाजिक विषयों पर लिखते हैं तो आप अपनी लेखन सामग्री हमें अपनी तस्वीर व पते के साथ ईमेल या डाक के माध्यम से भेज सकते हैं। चुनी हुई रचनाओं को माही संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

डाक का पता - संपादक, माही संदेश
50-51 ए, कनक विहार, एसबीआई बैंक के पास, हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर पिन-302021 राजस्थान
ईमेल-
mahisandesh31@gmail.com
Mob&whatsapp- 9887409303

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

v v v

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन **(98874-09303)**

v v v

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

v v v

सह-संपादक नित्या शुक्ला*
ममता पंडित*
डॉ. महेश चंद*
वंदना शर्मा*
नीरा जैन*

v v v

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*

v v v

ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) रमन सैनी* **9717039404**

v v v

संवाददाता ईशा चौधरी*
दीपक कृष्ण नंदन*
श्री राम शर्मा*
विनोद चौधरी*

v v v

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

v v v

बिजनेस हैड अनुराग सोनी* **9828198745**

v v v

कानूनी सलाहकार शिव कुमार अवार*

v v v

सर्कुलेशन मैनेजर आर.के. शर्मा* (मुम्बई)

v v v

मार्केटिंग सलाहकार अनिल कुमार शर्मा*

v v v

परामर्श समिति

डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*

v v v

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

v v v

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

v v v

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :
mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

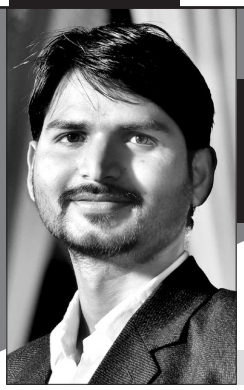

हिम्मत वतन की हम से है

हम देश के लिए अपना कर्तव्य निभाएं

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

सर्वप्रथम देश की समस्त सेना को माही संदेश का सलाम। गत वर्ष की भांति इस बार भी अगस्त माह में यह 'सेना विशेषांक' आपके हाथों में है। पिछले वर्ष आपने भरपूर समर्थन 'सेना विशेषांक' को दिया आशा है इस बार भी पहले से और अधिक आपका स्नेह व समर्थन हमें मिलेगा। सीमा पर जिस तरह सैनिक ड्यूटी करता है हम भी उसी तरह देश के लिए अपना कर्तव्य निभाएं। देश के अंदर कई ऐसी समस्याएं हैं जिन्हें हम हल कर सकते हैं, देश को सुरक्षित रखना सेना का काम है लेकिन देश को स्वच्छ और सुदृढ़ रखना प्रत्येक देशवासी का काम है। यकीन मानिए एक सैनिक हमेशा अपना कर्तव्य निभाता है बस हम नागरिक ही अपने कर्तव्य भूल जाते हैं। आइए हम प्रण लें कि एक सच्चे नागरिक के रूप में देश के लिए अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। जब हम कर्तव्य निभाएंगे तो देश बनाएंगे। यही संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे बच्चों में भी विकसित होंगे। देश सेवा करने के लिए सैनिक होना आवश्यक नहीं है। हमें सिर्फ सामाजिक रूप से जागरूक और कर्तव्य परायण होने की आवश्यकता है और देश सेवा के कई रास्ते अपने आप खुल जाएंगे। सिर्फ सीमा पर जाकर ही देश सेवा नहीं की जाती अपने आस-पड़ौस को साफ रख कर, एक जागरूक कर दाता/मत दाता बनकर, यातायात के नियमों का पालन करके, सोशल मीडिया का जिम्मेदारी पूर्वक प्रयोग करके, किसी धर्म विशेष का पक्ष लेने से पहले इंसानियत के धर्म को सर्वोपरि रखकर भी देश सेवा की जा सकती है। जैसे एक सैनिक का वतन से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता वैसे ही आप एक बार वतन को अपना धर्म बना कर तो देखिए मुश्किल नहीं है हो सकता है। जिंदगी आसान और खुशगवार हो जाएगी। सैनिक जो एक जीवन में भी हजार बार देश के लिए शहीद होने का सपना देखता है, क्या हम ऐसा सपना देश के विकास के लिए नहीं देख सकते। इस प्रण के साथ कि हम सेना की तरह देश के लिए हर वक्त तत्पर रहेंगे, हम सभ्य बनेंगे, हम कर्तव्यनिष्ठ बनेंगे और हर जरूरतमंद की सहायता के लिए तैयार रहेंगे, क्योंकि हिम्मत वतन की हम से है...ये बात हमें हमेशा याद रखनी है। मेरे देश की सेना और मेरे देशवासियों आपको दिल से सलाम...जय हिंद

शेष फिर

लेफ्टिनेंट जनरल सगत की शौर्य गाथा

लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह जिन्होंने न केवल देश की सेवा की बल्कि समाज सेवा में भी अपनी विशेष पहचान कायम की। इस वर्ष भारतीय सेना सगत सिंह का जन्म शताब्दी वर्ष भी मना रही है, इनके स्मारक का भव्य उद्घाटन दक्षिणी-पश्चिमी कमान के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल चेरिश मैथसन ने किया। जनरल सगत सिंह के बारे में माही संदेश के आगामी अंकों में भी उनके सैन्य जीवन की चर्चा जारी रहेगी...।

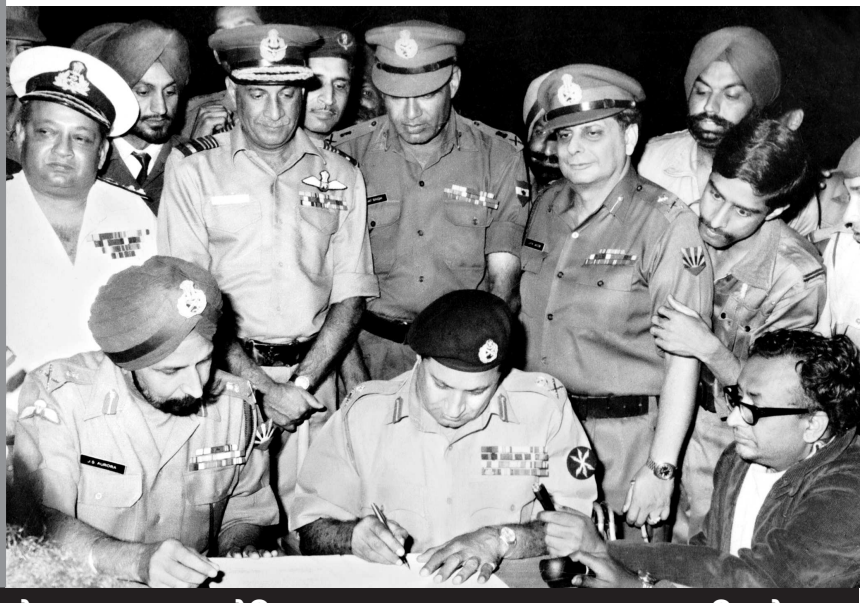

माही संदेश राष्ट्रीय पत्रिका के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन व सह संपादक ममता पंडित ने लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह के पुत्र कर्नल रणविजय सिंह (सेवानिवृत्त) से की विशेष बातचीत...

लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह का बचपन

राजस्थान की बीकानेर रियासत की रतनगढ़ तहसील के कुसुमदेसर गांव में 14 जुलाई 1919 को लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह का जन्म हुआ। अपने जन्म के बाद छह वर्ष तक सगत सिंह अपने गांव में रहे थे। बचपन के दिनों की याद करते हुए सगत सिंह के बेटे कर्नल रणविजय बताते हैं कि पिताजी बताया करते थे कि गांव में पानी बहुत खारा था, गांव के बाहर से मीठा पानी लेकर आते थे तो खुद पिताजी भी पानी लेकर आते थे। जनरल सगत सिंह के पिता ठाकुर ब्रज लाल सिंह भी गंगा रिसाला में हवलदार के पद पर कार्यरत थे। जनरल सगत सिंह की पढ़ाई बीकानेर के विद्यालय में हुई। सगत सिंह को फुटबॉल और वॉलीबॉल खेलने का शौक आरंभ के दिनों से ही था और फिर समय आया सेना में भर्ती होने का। खास बात यह है कि अपने प्रारंभिक दिनों में सगत सिंह जवान की तरह सेना में भर्ती हुए, अपनी कर्तव्य निष्ठा और ईमानदारी के कारण बहुत जल्द उन्हें नायक पद पर पदोन्नति दी गई। इसके बाद वर्ष 1939 में सर्विस सलेक्शन बोर्ड में चयनित होकर ऑफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल प्रशिक्षण प्राप्त कर सेकंड लेफ्टिनेंट के पद पर पदोन्नति पाई। इसके बाद अपनी प्रतिभा और कर्तव्यनिष्ठा से जनरल सगत सिंह ने भारतीय सेना में अपनी विशेष पहचान स्थापित की।

वर्ष 1968 में लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह को विशिष्ट सेना मेडल प्रदान किया गया इसके बाद वर्ष 1972 में उन्हें पद्मभूषण पुरस्कार से नवाजा गया। इसके पश्चात वर्ष 2013 में फ्रीडम ऑफ लिब्रेशन वॉर ऑनर अवॉर्ड प्रदान किया गया जिसे उनके पुत्र कर्नल रणविजय सिंह ने प्राप्त किया।

कर्नल रणविजय सिंह बताते हैं कि जनरल सगत सिंह के सैनिक जीवन का सबसे बड़ा ब्रेक तब आया जब उन्हें 1961 में ब्रिगेडियर का प्रमोशन देकर आगरा स्थित 50 पैराशूट ब्रिगेड का कमांडर बनाया गया और वो भी तब जबकि वो पैराट्रूपर नहीं थे, जनरल सगत सिंह की जीवनी लिखने वाले मेजर जनरल वी के सिंह लिखते हैं कि,

'उनको उस समय पैरा ब्रिगेड की कमान दी गई जब उनकी उम्र चालीस साल से ज़्यादा थी। पैरा ब्रिगेड की कमान तब तक सिर्फ़ पैराट्रूपर को ही दी जाती थी, किसी इंफ्रेंट्री अफ़सर को नहीं'

ब्रिगेडियर होते हुए भी उन्होंने पैरा का प्रोबेशन पूरा किया। गौरतलब है कि जब आप इसे पूरा कर लेते हैं तभी आपको विंग्स मिलते हैं जिससे पैराट्रूपर पहचाना जाता है। सगत जानते थे कि जब तक उन्हें विंग नहीं मिलते उन्हें अपनी ब्रिगेड का सम्मान नहीं मिलेगा, इसलिए उन्होंने जल्द से जल्द अपनी ट्रेनिंग पूरी करने के लिए एक दिन में दो दो जंप तक लिए, और इस तरह उन्होंने पैराट्रूपर का कोर्स पूरा किया।

जनरल सगत सिंह के पुत्र कर्नल रणविजय सिंह आगे बताते हैं कि 1961 के गोवा ऑपरेशन में जनरल सगत सिंह की 50 पैरा को एक सहयोगी भूमिका के रूप में चुना गया था, लेकिन उन्होंने इस जिम्मेदारी को बेहतर ढंग से निभाया किया और गोवा को इतनी कुशलता से आज़ाद कराया कि सभी हैरान रह गए।

लेफ्टिनेंट जनरल सगत ने सिखाया चीन को सबक

जनरल सगत सिंह को 17 माउंटेन डिविजन का जीओसी बनाया गया. उनकी इसी पोस्टिंग के दौरान नाथुला में चीनी सैनिकों की भारतीय सैनिकों से ज़बरदस्त भिड़ंत हुई, 1962 के बाद पहली बार जनरल सगत सिंह ने दिखाया कि चीनियों के साथ न सिर्फ़ बराबरी की टक्कर ली जा सकती है, बल्कि उन पर भारी भी पड़ा जा सकता है और उन्हें अपने पराक्रम से मात भी दी जा सकती है। कर्नल रणविजय सिंह बताते हैं कि जनरल सगत सिंह ने जनरल अरोड़ा से कहा कि भारत चीन सीमा की मार्किंग होनी चाहिए. उन्होंने कहा कि मैं सीमा रेखा पर चलता हूँ. अगर चीनी विरोध नहीं करते हैं तो हम मान लेंगे कि यही बॉर्डर है और वहाँ पर हम फ़ेसिंग बना

जनरल सगत सिंह के सैनिक करियर का वो स्वर्णिम क्षण था जब उन्हें नवंबर 1970 में 4 कोर की कमान दी गई,इन्होंने 1971 के बांग्लादेश युद्ध में निर्णायक भूमिका निभाई।

देंगे' जब उन्होंने ये करना शुरू किया तो चीनियों ने विरोध किया। उनके सैनिक आगे आ गए, कर्नल राय सिंह ग्रेनेडियर्स की बटालियन के सीओ थे, वो बंकर से बाहर आकर चीनी कमांडर से बात करने लगे, थोड़ी देर बाद चीनी सैनिकों ने फ़ायर शुरू कर दिया। कर्नल राय सिंह को गोली लगी और वो वहीं गिर गए। गुस्से में भारतीय सैनिक अपने बंकरों से निकले और चीनियों पर हमला बोल दिया, जनरल सगत सिंह ने नीचे से मीडियम रेंज की आर्टलेरी मंगवाई और चीनियों पर फ़ायरिंग शुरू करवा दी. इससे कई चीनी सैनिक मारे गए, चीनी भी गोलाबारी कर रहे थे लेकिन नीचे होने के कारण उन्हें भारतीय ठिकाने दिखाई नहीं दे रहे थे, जब सीज़ फ़ायर हुआ तो चीनियों ने कहा कि आप लोगों ने हम पर हमला किया है, एक तरह से उनकी बात सही भी थी, हमारे सारे शव चीनी क्षेत्र में पाए गए। बाद में सगत सिंह के अफ़सर उनसे नाराज़ भी हुए कि आपने खामखां की लड़ाई कर दी, हमारे करीब 200 लोग हताहत हुए. 65 लोग तो मारे गए। चीन के करीब 300 लोग हताहत हुए, लेकिन एक चीज़ ध्यान देने लायक थी कि 1962 की लड़ाई के बाद भारतीय सैनिकों ने जनरल सगत सिंह के नेतृत्व में चीन को धूल चटाई।

हिम्मत का दूसरा नाम लेफ्टिनेंट जनरल सगत

जनरल सगत सिंह के सैनिक करियर का वो स्वर्णिम क्षण था जब उन्हें नवंबर 1970 में 4 कोर की कमान दी गई। इसने 1971 के बांग्लादेश युद्ध में निर्णायक भूमिका निभाई। कर्नल रणविजय सिंह बताते हैं कि हेलिकॉप्टर मुआयने के दौरान जनरल सगत सिंह के हेलिकॉप्टर पर पाकिस्तानी सैनिकों ने गोलियाँ चलाईं थीं। जनरल साहब हेलिकॉप्टर से देखना चाह रहे थे कि कहां-कहां लैंडिंग हो सकती है। मेघना नदी के साथ-साथ जा रहे थे, आशुगंज ब्रिज के पास हेलिकॉप्टर पर नीचे से मीडियम मशीन

गन का फ़ायर आया, पायलेट बुरी तरह से घायल हो गया, जनरल सगत सिंह की छाती पर कांच के टुकडे बिखर गए थे और उन्हें हाथ में चोट भी लगी। लेकिन उस हेलिकॉप्टर के सह पायलेट ने स्थिति पर नियंत्रण कर लिया और उसे अगरतला वापस लाने में सफल हो गया. जब हेलिकाप्टर की जांच की गई तो पता चला कि उसमें गोलियों से तकरीबन 64 सुराख हो गए थे। जनरल सगत सिंह पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। उन्होंने एक और हेलिकॉप्टर लिया और दोबारा निकल पड़े निरीक्षण पर.. अपने इसी साहस के लिए सगत सिंह मशहूर थे।

जनरल सगत सिंह को सबसे बड़ी वाह-वाही तब मिली जब उन्होंने चार किलोमीटर चौड़ी मेघना नदी को हेलिकॉप्टरों की मदद से एयर ब्रिज़ बना कर पार किया, कर्नल रणविजय ने बताया कि बांग्लादेश युद्ध में जनरल सगत सिंह की कमांड में काम कर रहे लेफ्टिनेंट जनरल ओ.पी. कौशिक बताते हैं, 'उन दिनों हमारे पास एमआई 4 हेलिकॉप्टर हुआ करते थे। उनमें उन दिनों रात में लैंड करने की काबलियत नहीं होती थी, लेकिन ज़्यादा से ज़्यादा सैनिक मेघना पार कराने के लिए जनरल सगत ने लाइटेड हैलिपैड बनाने का आदेश दिया। कर्नल रणविजय आगे बताते हैं कि आपको आश्चर्य होगा कि उन्होंने खाली मिल्क कैन में केरोसीन तेल डाल कर रोशनी की, एमआई हेलिकॉप्टरों में एक बार में आठ सैनिक बैठ सकते थे, लगातार सैकड़ों फेरे लगा कर लगभग पूरी ब्रिगेड मेघना के पार उतार दी...'

कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल जनरल सगत सिंह

दिलचस्प ये है कि पूर्वी कमान के प्रमुख जनरल अरोड़ा , जिन्हें दोस्ताना व्यवहार के कारण सगत सिंह जग्गी कहते थे, उन्होंने लेफ़्टिनेंट जनरल सगत सिंह को मेघना नदी न पार करने के निर्देश दिए

थे, जब वो मेघना नदी पार कर चुके तो उनके पास जनरल अरोड़ा का फ़ोन आया और दोनों के बीच काफी कहा-सुनी हुई, आर्मी कमांडर अरोड़ा का फ़ोन आया कि आपने मेघना नदी क्यों पार की? जनरल सगत सिंह ने कहा आपने मुझे जो काम सौंपा था मैंने उससे ज़्यादा कर दिखाया है। सगत सिंह ने कहा मेरी ये ड्यूटी बनती है कि अगर मुझे किसी कदम से देश का फ़ायदा होता दिखाई देता हो तो मैं वो कदम उठा सकता हूँ, मैंने न सिर्फ़ मेघना नदी पार की है बल्कि मेरे सैनिक तो ढाका के बाहरी इलाके में भी पहुंच चुके हैं. जनरल अरोड़ा ने आदेश दिया, नहीं आप अपने आगे बढ़ चुके सैनिकों को वापस बुलवाइए। सगत सिंह ने कहा मेरा कोई सैनिक वापस नहीं लौटेगा. अगर आप इससे सहमत नहीं है तो आप दिल्ली तक ये मामला पहुंचाइए, इसके बाद सगत सिंह ने गुस्से से फ़ोन रखते हुए कहा वो मुझसे सैनिक वापस बुलाने के लिए कह रहे हैं... ओवर माई डेड बॉडी'। वर्ष 1971 में ढाका प्रशासन के इंचार्ज बन चुके जनरल सगत सिंह की लोकप्रियता बहुत बढ़ चुकी थी।

कर्नल रणविजय सिंह कहते हैं कि लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह का जीवन वीरता और कर्तव्यनिष्ठा की अभूतपर्व मिसाल है। देश व देश के बाहर भी लोगों से उन्हें जो प्यार मिला वो किसी पुरस्कार व पदोन्नति से कहीं बेहतर है। रिटायर होने के बाद जनरल सगत सिंह ने अपना जीवन जयपुर में बिताया, लेकिन यहां भी उन्होंने अपना सामाजिक कार्य जारी रखा। तत्कालीन मुख्यमंत्री भैंरो सिंह शेखावत की मदद से उन्होंने अपने पैतृक गांव में पीने की पानी की व्यवस्था करवाने व चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कर्नल रणविजय बताते हैं कि जब भी वे जयपुर छुट्टी पर आते थे तो अक्सर सुबह के समय 100 से 150 लोग खड़े होते थे और जनरल सगत बड़ी तन्यता से हर किसी की समस्या सुनते और उनकी मदद का हरसंभव प्रयास करते। वे जीवन के आखिरी दिनों तक भी जनकल्याण के कार्य में पूरे समर्पण के सथ जुटे रहे।

उनकी पौत्री मेघना सिंह कहती हैं, 'मेरे दादाजी एक ऐसे इंसान थे जो मेरे सबसे अच्छे दोस्त भी रहे। उनसे कोई भी बात कर सकता था। दादाजी कहते थे कि अपनी सोच को आप सही रखें क्योंकि जो आपकी सोच है आप भी वैसे ही हो जाओगे। मेघना बताती हैं कि दादाजी हमेशा से ही आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करते थे, कहते थे कि अगर आप आत्मनिर्भर हैं तो आप अपना और दूसरों का जीवन सफल बना सकते हैं।

जनरल सगत सिंह को भारत का सबसे निर्भीक जनरल माना जाता है. उन्होंने न सिर्फ़ कई ऑपरेशनों में जीत हासिल की बल्कि उस सबसे कहीं ज़्यादा काम किया जितना उन्हें करने के लिए दिया गया था, उनके साथ काम कर चुके जनरल ओ पी कौशिक कहते हैं कि 'मेरे विचार से भारतीय सेना का बेस्ट फ़ील्ड कमांडर जनरल सगत सिंह हुए हैं।'

पुलवामा शहीद जीतराम गुर्जर के घर पहुंचकर

चंद्रप्रकाश गुप्ता व समाज सेवी सुधीर माथुर ने भेंट किया शहीद का तैल चित्र

कारगिल युद्ध के दौरान जब शहीद सैनिक व अधिकारी तिरंगे में लिपटकर आ रहे थे उसी समय देश के एक सजग, संवेदनशील व मशहूर चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता अपनी कला के माध्यम से शहीदों के सजीव तैल चित्र बनाकर उन्हें उनके परिवार जन को भेंट कर नमन कर रहे थे। ये सिलसिला आज भी बदस्तूर जारी है।

रोहित कृष्ण नंदन

कारगिल दिवस 26 जुलाई 2019 को देश के मशहूर चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता ने शहीद परिवार को नि:शुल्क तैल चित्र भेंट करने के बीस वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। जब चंद्रप्रकाश गुप्ता अपनी कला से शहीद के तैल चित्र को मूर्त रूप देते हैं तो ऐसा लगता है कि मानो यह तस्वीर आपसे बातें कर रही हो, शहीद परिवार की आंखों में स्नेह के आंसू उमड़ पड़ते हैं, इस लम्हे के साक्षी हम भी रहे।

जो शहीद परिवार खोता है उसे कोई और कभी नहीं खो सकता

हाल ही में पुलवामा हमले में शहीद हुए नगर (भरतपुर) कस्बे के सुंदरावली गांव के रहने वाले शहीद जीतराम गुर्जर, जब इनके परिवार को शहीद जीतराम गुर्जर का तैल चित्र भेंट करने जयपुर से समाजसेवी सुधीर माथुर, चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता के साथ मैं स्वयं भी इस पुण्य कार्य का साक्षी रहा। जब हम सुंदरावली गांव में पहुंचे तो शहीद जीतराम गुर्जर का घर गांव के आखिरी छोर पर था, जैसे ही हमने राहगीर से शहीद का नाम लिया तो उसने बड़े अपनेपन से हमें रास्ता बताया, एक सैनिक अपने परिवार से निकलकर कैसे सारे जहां का हो जाता है इसकी बानगी हमें देखने को मिली। जैसे ही हम शहीद परिवार के घर

20 वर्षों से तैल चित्र के जरिए चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता दे रहे शहीदों को श्रद्धांजलि

पहुंचे, बड़े सम्मान और स्नेह के साथ हमें बिठाया गया। शहीद जीतराम गुर्जर के भाई से रास्ते में मोबाइल पर वार्तालाप हो चुका था। दो छोटी बच्चियां सुमन व इच्छा जिन्हें बस सिर्फ गोद का मतलब पता था लेकिन उन्हें क्या पता कि उन्हें अब पिता की गोद का सुख नहीं मिलेगा, जीवन की सारी खुशी खो चुकी पत्नी सुंदरी देवी, जिसके आगे सारा जीवन पड़ा है कैसे वो अपनी जिंदगी व बच्चों को संभालेगी, एक मां गोपा देवी जिसके कलेजे का टुकड़ा आसमां का सितारा बन चुका है कैसे उसे वो अपने कलेजे से लगाएगी, ये सारा मंजर आंखों के सामने यकायक घूम गया लेकिन भारतीय नारी और शहीद के परिवार के हौसले के आगे सब बौना साबित हो जाता है। जो शहीद परिवार खोता है उसे कोई और कभी नहीं खो सकता और न ही इस बलिदान की कीमत कभी अदा की जा सकती है। शहीद का परिवार अपने शहीद बेटे जीतराम गुर्जर का जीवंत तैल चित्र देखकर भावुक हो गया और चंद्रपकाश गुप्ता के इस नेक कार्य की सराहना करते हुए शहीद की मां गोपा देवी ने कहा कि आपने मेरे लाड़ले का जीवंत चित्र भेंट कर हमें अनमोल उपहार दिया है।

समाजसेवी सुधीर माथुर ने किया आर्थिक सहयोग

इस अवसर पर साथ रहे समाज सेवी सुधीर माथुर ने भी अपनी तरफ से शहीद परिवार को आर्थिक सहयोग के रूप में राशि भेंट की। इसके बाद हम भारी मन से शहीद परिवार से विदा लेकर जयपुर के लिए रवाना हुए, अब फिर से चद्रप्रकाश गुप्ता अपने अगले मिशन पर जुट गए हैं फिर एक शहीद परिवार के यहां जाने का सौभाग्य मिलेगा। देश के सभी शहीदों को शत-शत नमन।

29 जून 1999 कर्नल थापर को सूचना मिली कि उनके बेटे कैप्टन विजयंत थापर ने 'टोलोलिंग टॉप' पर हिंदुस्तान का ध्वज लहरा दिया है परंतु दुश्मन से लड़ते-लड़ते उन्हें गोली लगी है। कुछ ही समय पश्चात कर्नल थापर को पुन: सूचना मिली कि गोली विजयंत के सर पर लगी है। कर्नल समझ चुके थे कि विजयंत वीरगति को प्राप्त हो चुका है।

अगर फिर से मेरा जन्म हुआ तो मैं एक बार फिर सैनिक बनना चाहूंगा

शहीद कैप्टन विजयंत थापर

रचित सतीजा
पानीपत, हरियाणा

एक साक्षात्कार के दौरान शहीद विजयंत के पिता कर्नल थापर ने कहा

'एक कर्नल के लिये यह स्वीकार करना आसान है कि विजयंत दुश्मन से आर-पार की लड़ाई लड़ते-लड़ते शहीद हो गया है परंतु एक पिता के लिये स्वीकार करना कठिन है कि उसका बेटा इस दुनिया में नहीं है। मैंने उसका विजयंत इसलिये रखा था क्योंकि मैं चाहता था कि जीवन की हर लड़ाई के अंत में उसकी विजय हो। हमें उस पर फक्र है पर यह भी सच है के हम उसे हर रोज याद करते हैं। 'कहते हुये कर्नल का गला रुंध गया और साथ में बैठी विजयंत की माँ श्रीमती तृप्ता थापर की आँखों में आंसू तैर गये'

डबडबाई हुई आवाज में मां तृप्ता जी कहती हैं ....

'विजयंत एक नेकदिल इंसान था। जब उसकी आखरी चिठ्ठी मुझे मिली तो उसमें एक 6 वर्षीय लड़की रुकसाना का ज़िक्र था। विजयंत ने लिखा था कि रुकसाना के पिता की आतंकवादियों ने हत्या कर दी है। विजयंत बच्ची को दोबारा स्कूल जाने के लिये प्रोत्साहित कर रहा था। उसने लिखा था 'माँ', रुकसाना के पास पहनने के लिये ढंग के कपड़े नहीं हैं। मैं वापस आऊंगा तो उसके लिये कुछ कपड़े लेकर जाऊंगा, पर वो वापिस आया ही नहीं .....!

कर्नल थापर कहते हैं ....'विजयंत ने मुझसे एक वायदा लिया था। उसने कहा था कि मैं जहाँ पर अपनी आखरी सांस लूं वहीं पर वर्ष में एक बार मुझसे मिलने जरूर आना। आज विजयंत को हमसे बिछड़े 22 साल हो गये और हर साल मैं द्रास जाता हूँ। मुझे लगता है कि विजयंत वहीं कहीं है। इस साल 26 जुलाई कारगिल विजय दिवस पर भी अपने बेटे से मिलकर आया हूं।

मां तृप्ता जी के शब्दों में...

'उसे चॉकलेट बहुत पसंद थी। बचपन से चॉकलेट्स का दीवाना था। जिस यूनिफार्म में उसने अपनी आखरी सांस ली थी वह हमको सौंप दी गयी थी। मैं विजयंत की यूनिफार्म को तह लगा रही थी तो ऐसा लगा कि उसकी जेब में कुछ है। जेब में 300 रुपये थे और जानते हैं क्या था .....उसकी फेवरेट चॉकलेट्स थी !

12 जून 1999 को उसकी आवाज़ आखरी बार सुनी थी। उसने फोन किया था। उसने बताया था कि हमारी बटालियन ने तोलोलिंग पर जीत हासिल कर ली है।

...शेष पृष्ठ 12 पर

7 जुलाई 1999 को प्रोफेसर एस.के. नय्यर के लैंडलाईन फोन की घंटी बजी। प्रोफेसर ने फोन उठाया तो उन्हें सूचना मिली के उनका बेटा कैप्टन अनुज नय्यर रणभूमि में शहीद हो गया है। बगल में खड़ी अनुज की माँ प्रोफेसर साहब की आँखों से बह रहे आंसुओं से समझ चुकी थी कि उनका बेटा उन्हें छोड़ कर बहुत दूर चला गया है।

'इश्क की अमानत बड़ी भारी होती है सर इसे साथ ले कर मैं मर नहीं पाऊंगा'

शहीद कैप्टन अनुज नय्यर

रचित सतीजा

शहीद अनुज नय्यर के पिता प्रोफेसर साहब कहते हैं ....

'अनुज का इरादा लोहे से भी मजबूत था। उसकी उम्र 16 साल की रही होगी। इसी दौरान उसका एक एक्सीडेंट हुआ और उसके पैर में गंभीर चोट लग गई थी, डॉक्टर ने टांके लगाने की सलाह दी। किसी कारणवश उन्हें एनेस्थीसिया नहीं दी जा सकी। अनुज ने डॉक्टर से कहा कि वह बेहोशी का इंजेक्शन दिये बिना ही टांके लगा दें और वह दर्द सहने को तैयार है। कुल 22 टांके लगे थे और अनुज ने एक क्षण भी डॉक्टर को नहीं रोका। डॉक्टर ने बाद में अनुज से पूछा कि उसे दर्द नहीं हुआ तो उनका जवाब था कि दर्द मस्तिष्क में होता है, पैर में नहीं! उसने सिमरन के बारे में सब से पहले मुझे बताया था। मैं खुश था कि अनुज उस से शादी करना चाहता है जिससे वह बचपन से प्यार करता है। दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे। मैंने सगाई की तारीख अगस्त में पक्की कर दी थी। इसी बीच जुलाई में कारगिल युद्ध छिड़ गया और .....।

कारगिल युद्ध के दौरान

अनुज के कमांडिंग ऑफिसर ने एक साक्षात्कार में बताया ....' कैप्टन नय्यर को टाइगर हिल के पश्चिम में पॉइंट 4875 को खाली कराने का टास्क दिया गया, जो पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कैप्चर कर रखा था। मिशन पर जाने से पहले वह मुझसे मिला और बोला 'सर आपसे एक काम था' इतना कहते ही उन्होंने अपनी जेब से एक अंगूठी निकालकर मुझे देते हुआ कहा 'सर ये अंगूठी मैंने अपनी होने वाली पत्नी के लिए ली थी। मिशन पर जा रहा हूं, लौटूंगा या नहीं, कुछ कह नहीं सकता। मैं नहीं चाहता कि यह अंगूठी दुश्मन के हाथों में आ जाए, इसलिए आपको इसे सुरक्षित रखना होगा। मैंने अनुज से कहा कि वह मरने की बात क्यों कर रहा है। वह जिंदा वापिस आयेगा तो अनुज हंसते हुए बोला 'इश्क की अमानत बड़ी भारी होती है सर। इसे साथ ले कर मैं मर नहीं पाऊंगा'। उस पल मुझे लगा के अनुज मिशन पर जाने से पहले अपने आप को हर रिश्ते से मुक्त करना चाहता है। उस समय उसका एक ही लक्ष्य था पॉइंट 4875'

मरणोपरांत 22 वर्षीय कैप्टन अनुज को महावीर चक्र प्रदान किया गया। अनुज का पार्थिव शरीर जब उनके निवास स्थान पहुंचा तो उससे लिपट कर रोने वालों में से उनकी मंगेतर सिमरन भी थी।

पॉइंट 4875 को जीतना

यह जीत हिंदुस्तान के लिए बेहद जरूरी थी। असल में इसकी पोजिशन ऐसी जगह पर थी, जहां से एक झटके में जंग का रुख बदल दिया जा सकता था। अनुज और उनकी टीम वायुसेना की मदद के बिना समुद्र तल से 15990

फीट ऊंचे पॉइंट 4875 को फतह करने निकल पड़ी। वह तेजी से चोटी की ओर बढ़ने लगे। अचानक पाकिस्तानी घुसपैठियों को उनके होने की आहट हो गई। उन्होंने ऊंचाई से अनुज की टीम पर हमला बोल दिया। अनुज ने जल्दबाजी न दिखाते हुए मौके का इंतजार किया और फिर जवाबी हमला किया। अनुज की योजना काम आई और पाकिस्तानी घुसपैठियों को पीछे हटना पड़ा। अदम्य साहस और वीरता का परिचय देते हुये अनुज ने पाकिस्तान के नौ घुसपैठियों को मार गिराया साथ ही उन्होंने तीन मशीनगन बंकर भी तबाह कर दिये। वह आगे बढ़े ही थे कि दुश्मन ने छिपकर उन पर ग्रेनेड से हमला कर दिया। ग्रेनेड हमले में अनुज घायल हो चुके थे।

साथियों ने उन्हें रुकने के लिए कहा लेकिन वीरता की पराकाष्ठा को छूते हुये अनुज आगे बढ़ते रहे। अपने लहूलुहान हाथों से गोलियां बरसा रहे थे और इस घायल शेर को देख पाकिस्तानी अपने बंकर छोड़ कर छोड़कर भाग रहे थे । इसी बीच भागते हुये पाकिस्तानियों ने एक बॉम्ब फेंका और अनुज और उनकी पूरी टीम शहीद हो गई।

मरणोपरांत 22 वर्षीय कैप्टन अनुज को महावीर चक्र प्रदान किया गया। अनुज का पार्थिव शरीर जब उनके निवास स्थान पहुंचा तो उससे लिपट कर रोने वालों में से उनकी मंगेतर सिमरन भी थी।

मिशन शुरू होने से पहले समुद्र तल से 15990 फीट की ऊंचाई पर स्थित पॉइंट 4875 पर वायुसेना की मदद के बिना पहुंचना भी असंभव बताया जा रहा था और मिशन खत्म होने के पश्चात पॉइंट 4875 पर तिरंगा लहरा रहा था।

एक वीर सैनिक और उसकी टीम के अदम्य साहस शौर्य और पराक्रम ने कारगिल युद्ध में इंडियन आर्मी को जीत के कगार पर ला कर खड़ा कर दिया था।

क्रमशः पृष्ठ 10 से

अब पंद्रह हजार फीट ऊंची और माइनस 15 डिग्री तापमान में नॉल (तोलोलिंग और टाइगर हिल के बीच की पहाड़ी) पर विजय हासिल करने जाना है। उसने कहा था के माँ अब हमारी बीस दिन तक बात नहीं हो पाएगी, आप इंतजार मत करना... तोलोलिंग जीतने के बाद विजयंत को ब्लैक रॉक कॉम्प्लेक्स में थ्री पिमपल्स और नॉल को कैप्चर करने का टास्क मिला। तोलोलिंग के बाद दूसरी चुनौती थ्री पिमपल्स और नॉल पर कब्जा करना जहां से दुश्मन छिप कर गोलियां बरसा रहा था। पंद्रह हजार फीट की ऊंचाई और सीधी चढ़ाई भी विजयंत थापर के हौसलों को डिगा नहीं सकी। हालांकि इस मुश्किल मिशन में उनकी टुकड़ी के कई जांबाज शहीद हो चुके थे। लेकिन विजयंत थापर आगे बढ़ने से रुके नहीं। लेकिन वक्त ने उन्हें उस वक्त थाम लिया जब एक सीधी गोली उनके माथे पर लगी और शहादत का तिलक कर गई। मरणोपरांत इस जांबाज को वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

जंग के दौरान माता-पिता को लिखी एक चिट्ठी में विजयंत ने लिखा था

'जब तक आप लोगों को यह पत्र मिलेगा, मैं ऊपर आसमान से आप को देख रहा होऊंगा। मुझे कोई पछतावा नहीं है कि जिंदगी अब खत्म हो रही है बल्कि अगर फिर से मेरा जन्म हुआ तो मैं एक बार फिर सैनिक बनना चाहूंगा और अपनी मातृभूमि के लिए मैदान-ए-जंग में लड़ना चाहूंगा। अगर हो सके तो आप लोग उस जगह पर जरूर आकर देखिए, जहां आपके बेहतर कल के लिए हमारी सेना के जांबाजों ने दुश्मनों से लोहा लिया था।'

तस्वीर : योगेन्द्र यादव

तस्वीर बोल उठी–17

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 21 अगस्त) में प्रकाशित किया जाएगा–

तस्वीर बोल उठी-16

रचना भेजने का पता

संपादक माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021 (राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-16 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

उषा वर्मा 'वेदना'
जयपुर (राज.)

निर्दोष और मासूमयित से भरा वचपन
एक मुख पर गहन चिंता, दूजे के मुस्कान
मानो कहती है न हो निराश, करो अध्ययन
सफलता चूमेगी कदम, सार्थक होगा जीवन

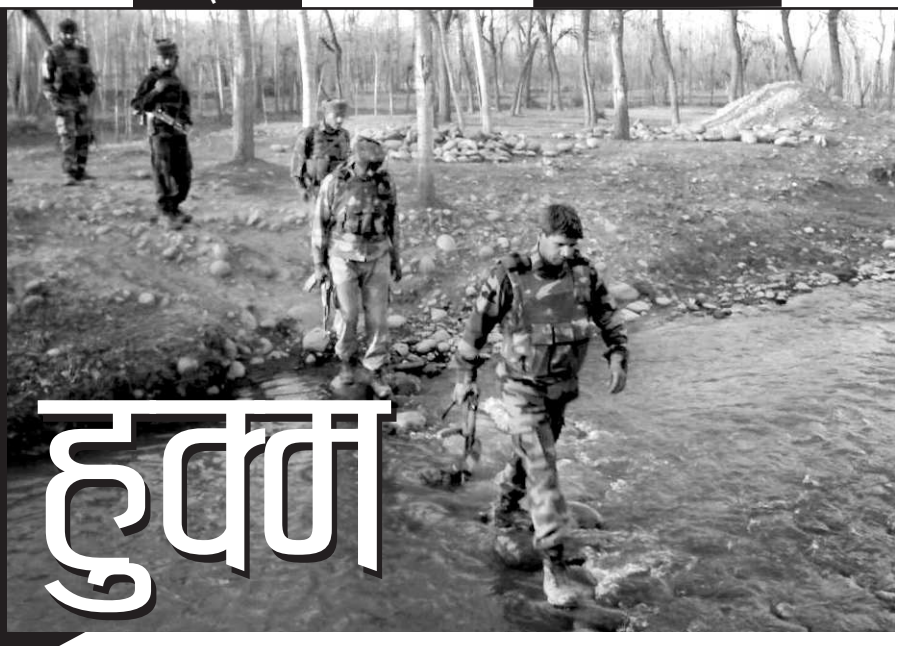

हुक्म

अगली सुबह परिवार ने कुछ हंसते कुछ उदासी से श्री कुमार को विदा कर दिया, सुंदर और श्री कुमार पलटन पहुंचे तो श्री कुमार का भव्य स्वागत किया गया पर श्री कुमार ने भी बोल दिया 'जिसने मिठाई मांगी उसकी टांगें तोड़ दूंगा' फिर इतना कह कर ज़ोर से हंसा और अटैची से मिठाई निकाल कर बांट दी।

मेजर (से.नि.) योगेश दहिया
चंडीगढ़ (हरियाणा)

रौबीले चेहरे, चुस्त कद काठी, भारी भरकम हथियार और उनके बीच और वर्दी में सजे हुए वीर नौजवान जो हर समय अपने कर्तव्य को लक्ष्य कर चलते हैं, फौज का नाम सुनते ही कुछ ऐसा सा दृश्य हमारी आंखों में खिंच जाता है।

जो कि बहुत हद तक सही भी है। सदियों से सेना, और सेनानियों का यही रूप हमारे समक्ष रहा है और ऐसा ही हमने सदा महसूस और अनुभव भी किया है। पर कितने ही लोग हैं जो उस वर्दी के अंदर उस सख्त रौबीले चेहरे के पीछे के भाई बेटे पिता या दोस्त को महसूस कर पाते हैं या उसे जान पाते हैं शायद ज्यादा नहीं होंगे।

कई बार यूं भी होता है कि हमें सेना को या सैनिक को जानने की इच्छा तो होती है पर छावनी के उन कंटीले तारों पर हमारी नज़र पड़ती है तो हमारी इच्छा मानो उस तार को लक्ष्मण रेखा मान लेती है और वहीं से लौट आती है

तो चलो यों करते हैं कि आप की इच्छा के सारथी हम हो जाते हैं और आप की जिज्ञासा को हांक कर हम उन कंटीले तारों के पार ले चलते हैं जहां एक अलग ही दुनिया बसती है , एक ऐसी दुनिया को साधारण दुनिया जैसी होते हुए भी थोड़ी सी अलग है वहां के अलग नियम हैं अलग चाल चलन है।

जहां चला भी दौड़ कर जाता है और बैठे बैठे सावधान विश्राम भी होता है ये दुनिया बाहर की दुनिया जैसी ही है और हर वो काम करती है जो बाहर वाले करते हैं बस अगर अलग है तो करने का तरीका करने का सलीका इस दुनिया को चलाता है या ये कहूं कि इस दुनिया को जो एक साथ पिरोता है वो है 'हुक्म ' नाम का एक सूत्र ! हुक्म इस दुनिया का एक अकेला राजा है ना उसकी इच्छा को अधूरा छोड़ा जा सकता है ना उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया का सकता है। हुकुम ने जो कहा जब कहा जैसा भी कहा वो ही सर्वोच्च है वो ही सत्य, सर्वोपरि है और वो ही सुंदर भी है । हुकुम का ना कोई सगा है ना कोई पराया यह सब पर अपनी एक सी कृपा दृष्टि रखता है। पर इसका अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं है कि हुकुम एक तानाशाह है या एक कठोर दिल क्रूर शासक है । हुकुम एक बड़ा ही न्याय प्रिय नरम दिल और सहज राजा है ये जो भी कहता है सब के बारे में सोच विचार करके , आगे पीछे का सोच कर हर पहलू पर गौर करने के पश्चात ही कुछ कहता है और अमूमन ये वो ही कहेगा जो सब के हित में होगा जो फौज की इज्जत और फौज के न्याय प्रणाली के अनुरूप होगा।

इस बात से मुझे एक बात याद आती है जिस से आप को हुकुम के महत्व और हुक्म की महिमा का पता चलेगा और आशा है कि आप को जीवन को देखने का एक नया नज़रिया भी मिले और लगे हाथों ये भी ज्ञात हो कि एक दूसरे के लिए अपने दोस्तों के लिए या अपनी पलटन के लिए कोई कितना समर्पित हो सकता है और उसके पलटन के साथी व अधिकारी भी उसी भाव से उस सैनिक के प्रति कितने समर्पित होते हैं और कितना हर सैनिक का कितना ध्यान रखते हैं। बात 80 के दशक की है श्री कुमार उन दिनों नायक हुआ करते थे

और अपनी पलटन की हैंडबॉल टीम के कप्तान कोच और प्रमुख खिलाड़ी भी थे। ये उन्हीं की बदौलत था कि उनकी पलटन कई बार हैंडबॉल की प्रतियोगिता जीत चुकी थी और अब उनका नाम पूरी कोर में मशहूर हो चला था कि खिलाड़ी हो तो श्री कुमार जैसा, अब आलम ये था कि हर मैच विपक्षी टीम के खिलाड़ियों को हुक्म होता था कि कम से कम दो या तीन खिलाड़ी बस श्री कुमार को कवर करेंगे पर फिर भी श्री कुमार का तिलस्म तोड़ना टेढ़ी खीर ही होता था।

पर इस बार की फजा कुछ अलग थी और इसके दो मुख्य कारण थे कि बाकी टीमों में नया खून खूब जोश मार रहा था और अभ्यास भी कर रहा था और यहां श्री कुमार की पलटन में सब जवान व अधिकारी थोड़े चिंतित थे, आखिरकार हैट्रिक चांस था पर श्री कुमार निजी कारणों के चलते छुट्टी पर थे , उनकी शादी जो थी। नायक श्री कुमार अब दुल्हा बनने जा रहे थे।

यह बात जब मुख्य कमान अधिकारी के पास पहुंची तो उन्हें भी थोड़ी चिंता हुई और उन्होंने सूबेदार मेजर साहब को बुलवा भेजा, कुछ देर की बातचीत में एक अजब फैसला ले लिया गया, फैसले के चलते नायक सुंदरवेलू को तैयार किया गया और उसको हुक्म दिया गया कि शादी के अगले दिन ही नायक श्री कुमार को लेकर पलटन में पहुंचें।

रेल के टिकट कटवा दिए गए और जैसा कि पलटन की रीत थी नायक श्री कुमार को पलटन की तरफ से शादी की मुबारकबाद के तौर पर एक बड़ा सा उपहार भी भिजवाया गया। सुन्दर बड़ी ही विकट स्थिति में उलझा हुआ था कि कैसे ये 'हुक्म' जा कर श्री कुमार को सुनाएगा और श्री कुमार क्या कहेगा और यदि कुमार मान भी जाए तो उसके परिवार वाले नई दुल्हन ये सब क्या कहेंगे इसी उधेड़बुन में सुंदर का सफर कब कट गया उसे पता ही नहीं चला और जल्दी ही उसने खुद को शादी के बाराती के रूप सजा हुआ पाया।

शादी सम्पन्न हुई पर सुंदर वेलू खूब नाचा खूब पेट पूजा भी की पर दिमाग से वो हुक्म नहीं निकला और सुंदर वेलू को सताता रहा। खैर ले दे के अब उपहार भेंट करने का समय भी आ पहुंचा और सुंदर को लगा कि बस यही एक क्षण है जब श्री कुमार को बताया जा सकता है कि उसकी अगली सुबह (जिस में मुश्किल से छह-सात घंटे ही बाकी थे) उसे पलटन के लिए रवाना होना है। जब तक सुंदर ने ये सोचा तब तक श्री कुमार उसे आवाज लगा रहा था और बता रहा था कि सबने उपहार दिए बस वो ही बाकी बचा है। सुंदर ने खुद को संभाला थोड़ा हंसा थोड़ा चिंतित थोड़ा घबराया और थोड़ा उत्सुक मानो सभी भाव उसके चेहरे पर एक साथ खिल उठे हों। आगे बढ़कर नव विवाहित जोड़े को शुभकामनाएं दीं उपहार दिया और एक ही झटके में श्री कुमार को एक ओर खींच लिया और रेल की रफ्तार से हुक्म सुना कर थोड़ा दूर हट कर खड़ा हो गया। मानो एक पहाड़ छाती से उतर गया हो और फिर एक खिलखिलाती मुस्कान उसके चेहरे पर जाने कहां से आई , यकायक ही बोल उठा 'मैडम को क्या बोलोगे कुमार, क्या वो हुक्म को समझ पाएगी?' अच्छा चलता हूं, कल रेलवे स्टेशन पर मिलेंगे और सुंदर ये बोल कर चला गया, पर अब श्री कुमार के चेहरे का रंग गायब हो चला था नई नई शादी हुई है और ऊपर से पलटन का हुक्म, रहा तो नाफरमानी गया तो आफ़त। खैर किसी तरह परिवार को इकठ्ठा किया और थोड़ी सी चतुराई चलते हुए सबके सामने ही मैडम को भी बताया कि जाना तो पड़ेगा और कोई चारा नहीं है, फौजी हूं हुक्म नहीं टाल सकता मेरी पलटन को मेरी बहुत ज़रूरत है, घर वाले जहां गुस्से में थे नाराज थे वहां अपने आप को गौरवान्वित भी महसूस कर रहे थे कि हमारे बेटे पर उसकी पलटन कितना भरोसा करती है।

किसी तरह मैडम भी मान गई पर एक कठिन शर्त भी रख दी कि हार गए तो घर मत आना, श्री कुमार ने भगवान का शुक्र मनाया और खुश भी हुआ कि बहुत समझदार पत्नी मिली है। अगली सुबह परिवार ने कुछ हंसते कुछ उदासी से श्री कुमार को विदा कर दिया, सुंदर और श्री कुमार पलटन पहुंचे तो श्री कुमार का भव्य स्वागत किया गया पर श्री कुमार ने भी बोल दिया 'जिसने मिठाई मांगी उसकी टांगें तोड़ दूंगा' फिर इतना कह कर ज़ोर से हंसा और अटैची से मिठाई निकाल कर बांट दी।

कमान अधिकारी भी श्री कुमार से मिलने आए और हुक्म पर खेद भी जताया पर कोई चारा ना था ये बात श्री कुमार भी जानता था। खैर एक सप्ताह बाद प्रतियोगिता आरंभ हुई और श्री कुमार की पलटन ने बेहतरीन प्रदर्शन किया पर अभ्यास की कमी के चलते फाइनल हार गए, श्री कुमार दु:खी था पर कमान अधिकारी भी बाकी लोगों ने भाग कर उसे गले लगा लिया कंधे पर उठाकर मैदान का चक्कर लगाया और कमांडर साहब को सारी कहानी का पता लगा तो उन्होंने भी श्री कुमार को बधाई दी।

खैर जब ये सब हो रहा था तो एक जवान आ कर श्री कुमार के हाथ में एक लिफाफा थमा गया, श्री कुमार ने लिफाफा खोला और उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा, कमान अधिकारी ने श्री कुमार को 10 दिन की स्पेशल छुट्टी प्रदान की थी और साथ में हवाई जहाज का टिकट, श्री कुमार संभल पाता तब तक एक और हुक्म मिल गया 'सी ओ (कमान अधिकारी) साहब ने अपनी गाड़ी भेजी है देर मत कर अभी निकल जाओ समय से फ्लाईट पकड़ पाओगे'

श्री कुमार गाड़ी में बैठा हवाई अड्डा पहुंचा और सारे रास्ते सोचता रहा कि ये इज्जत ये वाह वाही और ये सम्मान सब हुक्म मानने का नतीजा है तो है। एक हुक्म पालने की वजह से श्री कुमार पूरी पलटन ही नहीं पूरी डिविजन का सितारा हो चला था।

...एक खत आतंकवादी के नाम

तनिमा तिवारी
जयपुर, राजस्थान

साल की शुरुआत में एक सपना देखा था कि एक बहुत बड़े पत्थर के ऊपर एक बम रखा हुआ है। बम ब्लास्ट होने के कारण पत्थर छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाता है। हालांकि मैं बहुत दूर थी उस पत्थर से लेकिन उस पत्थर के टुकड़े मेरे ऊपर भी गिरने लगते हैं और टुकड़ों से बचने के डर से अचानक मेरी नींद खुल गई। इस सपने को मैंने एक बुरा वाकिया समझ कर भुला दिया था, पर अगले ही हफ्ते 14 फरवरी 2019 को ऐसे ही एक बम ब्लास्ट ने कितने सपनों और कितने परिवारों के चिथड़े उड़ा दिए।

मेरी कलम दूर बैठी मुझ पर हँस रही थी। बार-बार उठाती बार-बार हाथ से फिसल जाती। आंखों की नमी और हाथ के पसीने ने शायद मेरी पकड़ शिथिल कर दी थी। मैंने अपने आप को समेटा अपने टुकड़े-टुकड़े हो गए विचारों को एक जगह एकत्रित करने की कोशिश की और बड़ी मुश्किल से कलम उठा कर एक पत्र लिखा उन आतंकवादियों के नाम जिन्होंने यह घृणित कार्य किया।

अप्रिय आतंकवादी,

मेरे लिए तुम अप्रिय हो पर मुझे पता है कि अपनी माँ और अपने परिवार के लिए तो तुम अभी भी प्रिय हो।

अपने परिवार के लिए तो तुम अब भी प्यारे बच्चे हो। पर क्या तुमने इस कायरता पूर्ण हरकत के पहले उस माँ या उस परिवार के बारे में सोचा होगा?

शायद तुम्हारा जवाब हो कि 'हाँ परिवार का सोच कर ही मैंने यह कार्य किया है'। पर मेरे भाई तुम गलत हो किसी की जान लेकर किसका भला हुआ है आज तक। तुम्हें लग रहा है तुम दुश्मनी निभा रहे हो पर असलियत में देखो तो तुम ही अपने और अपने परिवार के सबसे बड़े दुश्मन हो। तुम्हें किसी ने बहकाया, जरा सा लालच दिया और तुम तो तैयार हो गए मरने मारने के लिए। मुझे पता है तुम्हें किसी ने जरूर स्वर्ग के द्वार का लालच दिया होगा। पर क्या तुम्हें पता है कि तुम्हें मरने के बाद जन्नत मिलेगी या जहन्नुम?

मुझे भी नहीं पता कि मुझे मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा या नर्क?

हम में से किसी को भी नहीं पता कि मरने के बाद क्या होगा?

अरे हमें तो यह भी नहीं पता कि हमारी अंतिम यात्रा में कितने लोग शामिल होंगे? लोग आएंगे भी कि नहीं? जिस वक्त के बारे में पता ही नहीं उस के लालच में इतना घृणित कार्य।

इस राह पर चलने से पहले अगर तुमने सिर्फ एक बार दिल से अपनी परिवार, अपनी माँ की ओर देख अपने कार्य के परिणाम के बारे में सोचा होता तो शायद इस पूरे जहान को तुम जैसे आतंकवादियों से मुक्ति मिल जाती ।

मानती हूं कि तुम गरीब हो सकते हो, अशिक्षित भी हो सकते हो

पर गरीब और अशिक्षित होना इंसानियत खत्म नहीं कर देता। इंसान बनने के लिए अमीर और शिक्षित होना जरूरी नहीं है। हाँ, विचारों की अमीरी जरूरी है। मुझे पता है तुम्हारे अंदर तो इतना साहस है कि अगर तुम चाहो तो समाज की दिशा और शक्ल दोनों बदल सकते हो।

कोशिश तो करो अपने उस साहस को सही दिशा में इस्तेमाल करने की। मेरे दोस्त, जन्नत और शौहरत पाने का कोई शॉर्टकट नहीं होता। यह तो बिल्कुल ही नहीं कि किसी की लाश के ऊपर से चलकर स्वर्ग के रास्ते जाया जाए।

तुमने भी अपने परिवार के बारे में सोचा, हम सब भी अपनी-अपनी जिंदगी में यूं ही रम जायेंगे। पर एक बार सोचो क्या उन 44 परिवारों की जिंदगी कभी भी सामान्य हो पाएगी? क्या तुम एक माँ को उसका बेटा वापस दिला पाओगे? क्या किसी बच्चे को उसके पिता से वापस मिलवा पाओगे ?

जब तुम किसी को जिंदगी नहीं दे सकते तो किसी की जिंदगी लेने का हक किसने तुम्हें दिया? तुम जैसे कायरता पूर्ण हरकत करने वाले लोगों से सिर्फ इतनी ही विनती है कि एक बार अपने सारे साहस को समेट, अपने लालच को दरकिनार रख , दिल से सोचो.... क्या वाकई में तुम देश, कौम ,समाज या अपने परिवार के लिए कुछ अच्छा कर रहे हो? नफरत बोओगे तो नफरत ही काटोगे।

अरे तुम चाहो तो अपने परिवार तो क्या अपनी पूरी कौम ,पूरे देश का नक्शा बदल सकते हो।

तुम्हारी माँ ने भी तो तुम्हें सिखाया होगा न कि सही नियत से ही बरकत होती है। फिर क्यों जरा से लालच से तुम्हारी नियत डगमगा जाती है।

तू कर कुछ ऐसा काम कि तेरा नाम हो जाए, चल इंसानियत की राह पर, गलत मंसूबों का काम तमाम हो जाए ऐसा साहस तुझ में कि तू लिख सकता है नई कहानी, कर दे इंसानियत के नाम अपनी जवानी। रख सब्र और कर भला, नफरत की राह पर भला किसको है प्यार मिला? मेरा विश्वास तुझ पर

तू कर सकता है,हाँ मुझे विश्वास है
कि प्यार की राह में भी
तू अपना नाम ऊँचा कर सकता है
इंसानियत की राह पर तुम्हारे वापस आने का इंतजार करती।

एक माँ
जय हिंद।

मेरी गोपनीय दिली इच्छा है कि मैं अकेला ही उन सभी बुराइयों एवं बुरे लोगों के खिलाफ संघर्ष करूं जो मानवता के कंटक हैं। इसके लिए मुझे पढ़ाई में अच्छा होना और एक उच्च पद पाना होगा चाहे वह भारतीय पुलिस सेवा में या सेना में अधिकारी का। मुझे अपना शरीर फौलाद का व संवेदनामय बनाना होगा। मुझे एकाग्रचित्त होने की कला सीखनी होगी। मुझे एक अच्छा इंसान बनना होगा।

अमित 17-07-92
शाम 5:15

एक दिन मेरा नाम भी होगा इंडिया गेट पर

शहीद अमित भारद्वाज

विजयलक्ष्मी जांगिड़
जयपुर (राजस्थान)

बीस वर्ष का एक नौजवान जिसकी आंखों में जवानी के रंगीन सपने होने चाहिए। जिसका मन उछलते-फांदते हिरण सा चंचल व इंद्रधनुषी हो। लेकिन यह क्या अमित ने उस उम्र में इतना कुछ निश्चय कर लिया। लक्ष्य दृष्टिगत भी और निशाना तीर पर, पूरी तैयारी, बिना समय गंवाए जो इस उम्र में अपने रंगीन सपनों को नहीं बल्कि मानवता के कल्याण के लक्ष्य को संधान करने निकल पड़ा। इतनी नाजुक उम्र और इरादे इतने फौलादी। कारगिल की चोटियां इस जांबाज को बुला रही थीं, वक्त कम था लक्ष्य बड़ा और रास्ता विकट। *माही संदेश राष्ट्रीय पत्रिका के लिए स्वतंत्र लेखिका विजयलक्ष्मी जांगिड़ ने शहीद अमित भारद्वाज के माता-पिता व बहिन से की विशेष बातचीत...*

आप शहीद अमित भारद्वाज के माता-पिता हैं, कैसा लगता है जब यह संबोधन सुनते हैं?

पिताजी- बहुत अच्छा लगता है। खास उन अवसरों पर तो गर्व की अनुभूति होती है जब कोई समारोह या किसी अवसर पर हमें बुलाया जाता है, लोग बहुत सम्मान देते हैं। शायद किसी भी माता-पिता के लिए इससे बड़ी बात नहीं हो सकती कि शहीद के माता-पिता कहलाएं। हम सेना के एक कार्यक्रम में

थे, वहां सब अमित को सर कहते हैं। एक खास बात जब तक सेना का उपस्थिति वरिष्ठ अधिकारी न कहे तब तक खाना शुरू नहीं करते। इतना सम्मान और आदर एक दूसरे को अपने सीनियर्स को सेना में दिया जाता है। यह देखकर अच्छा लगता है और ये सम्मान सभी सैनिक परिवारों के लिए होता है। हमारा तो कोई सैनिक बैकग्राउंड भी नहीं है, लेकिन बेटे की वजह से यह मान सम्मान मिल रहा है। गर्व तो होता ही है।

अमित भारद्वाज बचपन में कैसे थे?

माता जी- वैसा ही जैसा हर बच्चा होता है। नटखट, बहादुर, जिज्ञासु और सबसे अच्छी बात अनु की ये थी कि वो बहुत दयालु था। मतलब राह चलते किसी की भी मदद करना। 5-6 साल की उम्र में दीवारें फांदना व बहादुरी वाले काम उसे पसंद थे। अपनी चीजें किसी जरूरत मंद को दे देता था। ऐसा लगता था कि जीवन उसका नहीं किसी की अमानत था। लगता नहीं था एक दिन अपना जीवन भी देश के लिए दे जाएगा।

अमित भारद्वाज ने कब निर्णय लिया कि वो सेना में जाएंगे या आपको कब पता चला उनके इस निर्णय के बारे में?

पिताजी- वर्ष 1995 में जब सीडीएस पास किया तब हमें पता चला लेकिन उस समय उसका इंटरव्यू नहीं हो पाया, लेकिन फिर वर्ष 1996 में परीक्षा दी और पास करके ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी चेन्नई चला गया। लेकिन हमें कभी नहीं लगा कि अनु सेना में जा सकता है। क्या करना है पूछने पर अनु कह देता कि वक्त बताएगा। बरसों बाद जब उसकी डायरी पढ़ी तो उसमें लिखा था कि अपने मन की चाह किसी को भी पता मत चलने दो, किसी को भी आपके

रहस्यों को मत जानने दो, आपकी सफलता को अपने आप रहस्य उद्घाटन करने दो। कुछ ऐसी बातें जो अमित को उसके हमउम्र बच्चों से अलग बनाती थी, जैसे एक बार मुझसे पॉकिट मनी ले गया और किसी दोस्त को चाहिए थी तो दे दी, पूछने पर सच-सच बता दिया, झूठ कभी भी नहीं बोला जो भी किया हमें बताकर किया। बस इतना बड़ा रहस्य छिपा गया। मेरे कहने पर प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठ जाता था पर जान बूझकर तैयारी नहीं करता था, शायद उसने बहुत पहले ही तय कर लिया था कि सेना में ही जाना है।

अमित भारद्वाज के बचपन या युवाकाल का कोई प्रसंग या घटना याद आती है जिससे लगता हो कि वे प्रतिभाशाली व असाधारण थे।

पिता- ऐसा तो कुछ खास नहीं था। एक सामान्य विद्यार्थी रहा है अमित। हां मुझे याद आता है कि उसके कुछ ज्यादा दोस्त नहीं थे, और हां उसे साहित्य व समाचार पत्र पढ़ने का बहुत शौक था। स्कूल से घर आकर सबसे पहले समाचार पत्र पढ़ने बैठ जाया करता था। अंग्रेजी साहित्यकार व उपन्यास आदि भी पढ़ा करता था, लेकिन जब उसकी डायरी पढ़ी तो मालूम हुआ कि उसकी हिंदी की पकड़ भी बहुत अच्छी थी। मुझे याद आता है कि एक बार जब मैं ऑफिस से घर लौटा तो एक वृद्ध व्यक्ति को डायनिंग रूम में बैठा रखा था और उसे दूध का गिलास देकर पीने की कह रहा था। पूछने पर बताया कि रास्ते में बेहाल मिला तो घर ले आया। एक घटना का जिक्र करते हुए मुझे फक्र होगा कि जब 1998 में बैलगांव में अनु की कमांडो ट्रेनिंग चल रही थी तब चार मार्च को अपने दोस्त संजू के साथ दिल्ली के इंडिया गेट पर घूमते हुए उसने अचानक कहा 'देखना एक दिन इंडिया गेट पर मेरा नाम आएगा'। शायद ईश्वर ने उसकी यह इच्छा सुन ली थी और हाल ही वर्ष 2019 में प्रधानमंत्री ने उद्घाटन

शहीद अमित भारद्वाज की डायरी में लिखा एक अंश

25-07-1992

इस बात का आज मुझे अहसास हुआ कि मैं मार्च में 20 वर्ष का हो गया तथा मुझे एक जिम्मेदार व्यक्ति होना चाहिए। तुम अमित हो, अनु हो, विश्व तुम्हारी प्रशंशा करे कुछ ऐसा कर, तुम्हारा सम्मान करे, जीवन बहुत थोड़ा है, एक तिहाई बीत गया है। शहीद अमित की डायरी के ये अंश बताते हैं कि रंगीन सपनों भरी जवानी में कुछ बड़ा कुछ अलग करने का सपना देखने वाला ये नौजवान आज उन युवाओं के लिए आदर्श है जो फैशन, दिखावे और आडंम्बरों के पीछे भागते हुए अपनी बहुमूल्य ऊर्जा यूं ही खो देते हैं।

किया जिसमें 47,62,65,71,99 के वीर शहीदों के नामों को शामिल किया गया।

आपको कब पता चला कि आपका बेटा शहीद हो गया है?

माताजी- हमें अनु कुछ बताता नहीं था, कुछ भी उसके साथियों और दूसरे लोगों से पता चलता था। कारगिल में पहले भी अनु एक दो बार बाल-बाल बचा था। वर्ष 1998 में जब वे लेह के रास्ते से कमांडो कोर्स के लिए कारगिल जा रहे थे, नवंबर-दिसंबर की बात थी। उस समय एयरबेस नहीं थे। ट्रक में 20 कमांडो थे और अनु ड्राइवर के साथ आगे बैठा था, अचानक जलेबी मोड पर ट्रक खाई में जा गिरा, लेकिन ये सुरक्षित बच गए। बाद में जब मैंने उसकी जैकेट देखी जो अनु ने उस समय पहनी थी, अनगिनत छेद थे उसमें, ईश्वर ने ही उसकी रक्षा की थी। इसी बीच अमित भारद्धाज के पिता बोले 15 मई 1999 को अपने 30 जवानों के साथ अनु ने 30 फुट गहरी बर्फ में लगातार 36 घंटे तक चलते रहकर लापता कैप्टन सौरभ कालिया एवं उनके 5 जवानों को जो रुटीन पैट्रोलिंग के दौरान मिसिंग हो गए थे, उनकी खोज में निकल पड़े। इससे पहले कि अमित और उनके सिपाही कुछ समझ पाते शत्रु ने हैवी मशीनगन और मोर्टार से हमला कर दिया। मेरे बेटे ने फिर जो किया वास्तव में हर सैनिक को उसी पल की चाह होती है। कवरिंग फायर करते हुए अपने 29 जवानों को वहां से सुरक्षित लौटकर मुख्यालय तक सूचना देने व अतिरिक्त सहायता लाने भेज दिया। हवलदार राजवीर अपने साहब को छोड़कर नहीं आया। किसी कार्यक्रम में मिली हवलदार राजवीर की पत्नी ने जो कहा आज हर स्त्री को उस साहस व नैतिकता का परिचय देने चाहिए। मेरी पत्नी से जब उनकी बात हुई तो उसने कहा अगर मेरा पति यदि अपने प्राण बचाकर साहब को छोड़कर आ जाता तो मैं उससे कभी बात नहीं करती। 13 जुलाई 1999 को युद्ध विराम के बाद हमें अमित का पार्थिव शरीर मिला। हमें बताया गया कि 17 मई 1999 को उन्हें गोली लगी होगी, लेकिन अंतिम श्वास तक वो शत्रु से लोहा लेते रहे। वीरगति होने के बाद हाथ में बंदूक लिए शहादत स्थल पर वो युद्ध के लिए तैनात मुद्रा में मिला। 15 जुलाई 1999 को राजकीय सम्मान के साथ पार्थिव देह का अंतिम संस्कार किया गया। इस घटना के कुछ ही दिन पहले उसकी मां से उसकी बात हुई थी, कह रहा था कि मैं जल्दी ही घर आऊंगा, आपके लिए लेह से सामान खरीदा है बाद में वो सामान उसके साथ बॉक्स में आया।

माताजी- कुछ समय बाद हमें एक लिफाफा मिला जिसमें 5000 रुपए थे जो उसने किसी को सहायता के रूप में दिए थे, वही लौटाए थे। उसकी इच्छा थी कि हमारी एनिवर्सरी पर वो कोई गिफ्ट लाएगा, उसके जाने के बाद उन्हीं 5000 रुपए से मेरी बेटी सुनीता एक चांदी का कटोरा लाई थी।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947

शिवकुमार 'अवार' फौजदार
एडवोकेट,
राजस्थान उच्च न्यायालय
8290123456

भारतीय विधि का इतिहास भारत में अग्रेजों के आगमन तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना से जुड़ा हुआ है। यह सर्वविदित है कि सन् 1601 में अंग्रेज लोग भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे। उन्होंने सर्वप्रथम 1612 में सूरत में तत्कालीन मुगल सम्राट जहांगीर की अनुमति से एक फेक्ट्री की स्थापना की थी। तत्पश्चात् सन् 1639 में फ्रांसिस डे नामक एक अंग्रेज द्वारा चन्द्रगिरि के राजा से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लिए कुछ जमीन प्राप्त की थी। प्रारम्भ में इसे मद्रास पटटनम् के नाम से सम्बोधित किया गया। यहा दो प्रकार की बस्तियां बसाई गई, जिनका नाम दिया गया- व्हाइट टाउन एवं ब्लैक टाउन। यही बस्तियां आगे चलकर 'मद्रास' के नाम से विख्यात हुईं। इस प्रकार मद्रास नगर की स्थापना का श्रेय फ्रांसिस डे को कहा जाता है। लगभग सन् 1661 में ब्रिटिश सम्राट चार्ल्स द्वितीय के साथ पुर्तगाल के राजा की बहिन के विवी के सम्बन्ध में एक संधि सम्पन्न हुई थी। इस सन्धि के अन्तर्गत पुर्तगाल के राजा द्वारा बम्बई को दहेज के रूप में चार्ल्स द्वितीय को सौंप दिया गया था। कालान्तर में चार्ल्स द्वितीय ने एक चार्टर के अन्तगर्त बम्बई को 10 पौण्ड के वार्षिक लगान की एवज में कम्पनी को हस्तगत कर दिया। इसी समय से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के द्वारा बम्बई व अन्य जगहों पर कानून बनाने तथा आंग्ल न्यायालयों पर आधारित न्याय व्यवस्था स्थापित करने का अधिकार कम्पनी को सौंपा गया था।

भारत के तिरंगे ध्वज को पिंगली वैंकेया ने प्रारूप या डिजाइन किया था। इन्होंने ही महात्मा गांधी के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि भारत का भी एक अपना ध्वज होना चाहिए, जो देश की पहचान बन सके। इसके मौलिक डिजाइन में केवल दो ही रंग थे, केसरी और हरा। राष्ट्रीय झण्डे की संरचना को संविधान सभा ने 1947 में अपनाया था।

तब से लेकर भारत की आजादी की पूर्व संध्या तक ब्रिटिश राज की हुकूमत रही। भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने से पहले विधिक प्रक्रिया के तहत एक अधिनियम भी बनाया गया था, जिसे भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के नाम से जाना जाता है।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947

लार्ड माउंटबेटन भारत के अंतिम गर्वनर जनरल थे। जब उन्होंने 22 मार्च 1947 को गवर्नर जनरल के पद पर कार्यभार संम्भाला था, उस समय देश में साम्प्रदायिक दंगों के कारण स्थिति अत्यन्त तनावपूर्ण थी। स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए, लार्ड माउंटबेटन ने एक योजना बनाई जिसमें भारत को दो अधिराज्यों हिन्दुस्तान एवं पाकिस्तान में विभाजित किया जाना प्रस्तावित था। उसमें यह भी अनुशंसा की गई थी कि सत्ता का हस्तान्तरण 15 अगस्त 1947 को किया जाये। इसी योजना के अनुरूप एक विधेयक तैयार किया गया, 18 जुलाई को अधिनियम बना तथा 15 अगस्त 1947 से ''भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम'' के नाम से प्रभावी हुआ।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 में कुल 20 धारायें तथा दो परिशिष्ट हैं। इसके मुख्य प्रावधान निम्नलिखित हैं-

इस अधिनियम द्वारा भारत का विभाजन होकर यह दो अधिराज्यों हिन्दुस्तान एवं पाकिस्तान में विभक्त हो गया। गवर्नर जनरल द्वारा 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान का दायित्व मि. जिन्ना तथा 15 अगस्त 1947 को भारत गणराज्य का दायित्व भारतीय नेताओं को सौंपा गया था।

1. 14 अगस्त 1947 के पश्चात् इन दोनों अधिराज्यों पर ब्रिटिश सरकार का कोई अधिकार नही रह गया।
2. इस अधिनियम के प्रभाव में आते ही भारत ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण से पूर्णतया मुक्त हो गया।
3. प्रत्येक गणराज्य के लिए एक गवर्नर जनरल की नियुक्ति की व्यवस्था की गई तथा नियुक्ति का अधिकार ब्रिटिश सम्राट को दिया गया।
4. दोनों राज्यों की सीमाएं सुनिश्चित की गईं अर्थात् हिन्दुस्तान व पाकिस्तान दोनों राज्यों की सीमा का सीमांकन किया गया था।
5. दोनों अधिराज्यों को अपनी

संविधान सभाओं के माध्यम से अवना संविधान तैयार करने का अधिकार दिया गया। जब तक नये संविधान नहीं बन जाते तब तक दोनों अधिराज्यों के लिए भारत सरकार अधिनियम 1935 के अधीन कार्य करने की व्यवस्था की गई।

6. भारत सचिव के पद को समाप्त कर उसके स्थान पर राष्ट्र सचिव के नये पद का सृजन किया गया।
7. दोनों राज्यों को विधायी शक्तियां प्रदत्त की गईं। यह प्रावधान किया गया कि 15 अगस्त 1947 के पश्चात् ब्रिटिश संसद द्वारा पारित कोई भी कानून इन दोनों अधिराज्यों पर लागू नही होगा।
8. गवर्नर जनरल की विवेकाधीन शक्तियों को 15 अगस्त 1947 से समाप्त कर दिया गया।
9. प्रान्तों की विशेषाधिकार शक्तियों का भी उन्मूलन कर दिया गया।
10. आपात अवस्था में गवर्नर जनरल को अध्यादेश जारी करने की शक्तियां प्रदान की गईं। ऐसा अध्यादेश छः माह तक प्रभाव में रह सकता था।
11. उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त की उन जनजातियों से समझौते और वार्तालाप का कार्य उत्तराधिकारी अधिराज्यों द्वारा जारी रखे जाने की व्यवस्था की गई।
12. भारत सचिव द्वारा नियुक्ति सिविल सेवा के अधिकारीयों के नयेराज्यों में यथावत् कार्य करते रहने तथा उनकी सेवा शर्तों में ऐसा कोई परिवर्तन नही किये जाने की व्यवस्था की गई। जिससे अनके हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो।
13. गवर्नरों और गवर्नर जनरल को जारी किये गये दिशा निर्देश विलेख समाप्त कर दिये गये।
14. भारत की सशस्त्र सेना के दोनों राज्यों में विभाजन का कार्य गवर्नर जनरल को सौंपा गया, लेकिन ब्रिटिश सेना को इस व्यवस्था से मुक्त रखा गया।
15. संविधान निर्मात्री समिति से वही अभिप्राय लिया गया जो 9 दिसम्बर 1946 की बैठक में तय हुआ था।
16. जनमत संग्रह के आधार पर बंगाल, पंजाब एवं आसाम के विभाजन तथा उनके सीमांकन का प्रावधान किया गया।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 भारतवासियों के लिए एक स्वर्णिम दस्तावेज था। यह भारत में एक नई आशा की किरण लेकर आया था। इस अधिनियम के लागू होते ही भारत में विगत 200 वर्षों से चले आ रहे ब्रिटिश शासन का अन्त हो गया। अब भारत अथवा हिन्दुस्तान एवं पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्र अथवा अधिराज्य बन गये। भारतीय देशी राज्यों को उनकी प्रभुसत्ता पुनः प्राप्त हो गई।

भारत के तिरंगे ध्वज को पिंगली वैंकेया ने प्रारूप या डिजाइन किया था। इन्होंने ही महात्मा गांधी के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि भारत का भी एक अपना ध्वज होना चाहिए, जो देश की पहचान बन सके। इसके मौलिक डिजाइन में केवल दो ही रंग थे, केसरी और हरा। राष्ट्रीय झण्डे की संरचना को संविधान सभा ने 1947 में अपनाया था। राष्ट्रीय झण्डा तीन रंगों का है। ऊपर केसरी बीच में सफेद और नीचे हरा है। झण्डे की लम्बाई और चौड़ाई में 3 और 2 का अनुपात है। झण्डे के बीच में नीले रंग का चक्र है जो कि प्रगति का प्रतीक है। इसकी संरचना उस प्रकार के चक्र की है, जो अशोक के सारनाथ शेर के चिन्ह में है। भारत की आजादी के दिन मध्यरात्रि को लालकिला की प्राचीर से फहराया गया था और भारत की आजादी का जश्न भी मनाया गया था।

हालांकि राष्ट्रीय ध्वज को ससम्मान सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले तक ही फहराया जा सकता है, सूर्यास्त में नहीं!

मेरी दुआ

तुम सब जब युद्ध के
शंखनाद से गर्वित हो
मेरे माथे पर चिंता की
रेखाएं उभर आयी हैं,
बहुत कोशिश है कि स्थिर दिखूँ
पर आँखों में आशंकाएं
उतर आयी हैं।

हो सकता है जग मुझे स्वार्थी समझे,
किंतु मैंने जो देखे हैं,
वो घाव बहुत गहरे हैं
जंग, जीत और जश्न तुम्हें मुबारक,
सामने मेरे बस मासूमों के चेहरे हैं।

शक मुझे जरा नहीं उनके पौरुष पर
वो विजय वरण कर ही आएंगे
सच है यह भी लेकिन,
गर एक भी छूटा
हम जश्न नहीं मना पाएंगे।

चाहे तुम मुझे कायर कहना
मैं फिर भी शांति की दुआ मांगूंगी
जब तक नहीं लौटते सकुशल सभी
मैं उस अंतिम प्रहर तक जागूँगी।

भारतीय सशस्त्र सेना के हर जांबाज के लिए दुआ करिए कि वो जहां भी हों सुरक्षित रहें।

ममता पंडित
देवास, मध्य प्रदेश

सिला

विजेता सूरी रमण
मुंबई

चिराग अपनी दोनों छोटी बहनों के संग सुबह से ही छत पर पतंग चढ़ा रहा था। तेज धूप सिर पर चढ़ आई थी, किंतु चिराग पसीने से तरबतर धूप में कभी इधर दौड़ता तो कभी उधर। दोनों बहनें पीछे-पीछे भाग रही थी। छुटकी तो अपने लाडले भाई का कभी पसीना पोंछती कभी पानी की बोतल खोल उसके मुंह में पानी उंडेल देती। पतंग का मुकाबला जोरों पर था। आसमान में दो पतंगें आपस में गुत्थम-गुत्था हो रही थी तभी अचानक जोर से माँ की आवाज आई चि...रा..ग.... और एक बड़ी दुर्घटना घट गई.... चिराग का संतुलन बिगड़ गया और वह कच्ची दीवार के साथ हवा में तैरता हुआ जमीन पर मुँह के बल जा गिरा। हवा में एक साथ तीन चीखें गूंज उठी। दोनों बहनें तेजी से नीचे की ओर भागीं शोर मच गया मां दादा दादी भागकर बाहर निकले सामने खून से लथपथ चिराग छटपटा रहा था। आनन फानन में एम्बुलेंस आ गई चिराग को अस्पताल ले जाया गया घर में क्रंदन मच गया था। मां जड़वत सी खड़ी आईसीयू के बाहर डॉक्टर का इंतजार कर रही थी। 2 घंटे की भरसक कोशिश के बाद भी डॉक्टर चिराग को नहीं बचा पाए। देखते ही देखते साक्षी की आंखों के सामने उसके जिगर का टुकड़ा उसके जीने का सहारा चिराग भी छिन गया। वह उसे सीने से लिपट 'जल बिन मछली' की तरह तड़पती रही। पूरे मोहल्ले में मातम का माहौल था। हर किसी की जुबान पर चिराग की चर्चा थी कोई उसके उच्छशृंखल स्वभाव को तो कोई मां की लापरवाही को कारण बता रहा था। साक्षी की सास तो उसे पानी पी-पीकर कर कोस रही थी। बदशगुनी कलमूंही डायन न जाने किस-किस संबोधन से उसे पुकार रही थी। पति को खा गई अब बेटे को भी निगल गई उसकी बातों से पत्थर का कलेजा भी फट जाए परंतु साक्षी मौण जड़वत् सी बैठी सब सुन रही थी। बीच-बीच में एक दो बार उसके ससुर ने समझाने का प्रयास किया लेकिन वह उन पर भी घायल शेरनी की तरह टूट पड़ी।

देखते देखते एक महीना हो गया अंत्येष्टि से लेकर मासिक क्रिया कर्म तक के सब काम निपट गए। साक्षी कलेजे पर पत्थर रखकर जी रही थी, जी क्या रही थी बस जिंदगी को जैसे ढो रही थी। अभी 2 बरस पहले ही उसने अपने पति को कारगिल के युद्ध में खो दिया था। दो देशों के आपसी बैर ने उसके पति को निगल लिया था। सरकार ने उस समय बड़े-बड़े वादे किए थे, जैसे सरकारी नौकरी बच्चों की परवरिश पढ़ाई लिखाई माँ बाबू जी की सुख सुविधा व अनेक सुविधाएं। लेकिन मात्र पेंशन के उन्हें आज तक कुछ नहीं मिला था। साक्षी घर का कामकाज निपटा कर देर रात तक सिलाई कढ़ाई करके कैसे भी घर के खर्चों को पटरी पर लाने का प्रयत्न करती.... थकहार कर नींद कम आती ....रात भर बेटियों को लेकर उनके भविष्य के ताने बाने बुनती रहती कब आँख लग जाती पता ही नहीं चलता।

सोमेश तो शहीद हो गए लेकिन साक्षी सास के तानों से हरदम तिल तिल कर मर रही थी।

साक्षी अपनी यादों में खोई सब्जी काट रही थी कि तभी भीतर से दरवाजा खुलने की आवाज आई और सास रणचंडी की तरह उसकी तरफ बढ़ी गरजते हुए बोली, 'उठो अभी के अभी अपना बोरिया बिस्तर उठाओ और अपनी बेटियों के संग हमेशा हमेशा के लिए मेरे घर से दफा हो जाओ'।

साक्षी के हाथ पाँव फूल गए गिड़गिड़ाते हुए बोली, 'मांजी मैं भला कहां जाऊंगी, आपके सिवा मेरा है ही कौन? माता-पिता तो कब के गुजर गए भाई विदेश में है आप ही बताओ मैं किसके पास जाऊं ? मेरा आप लोगों के सिवाय कोई नहीं अम्मा यहीं पड़ी रहने दो मुझ अनाथ को' अम्मा दया करो मुझ पर।

'नहीं बिल्कुल नहीं' तुम अब इस घर में एक पल भी नहीं रह सकती' दहाड़ते हुए उसने कपड़ों की पोटली उसके मुंह पर दे मारी। साक्षी ने हाथ जोड़ते हुए विनम्र प्रार्थना की,'माँजी' इन मासूम बेटियों की खातिर मुझे इस घर में पड़ी रहने दें'। लेकिन वह तो आज खार खाए बैठी थी साक्षी को घसीटते

हुए दरवाजे के बाहर तक ले गई बच्चियां रोती हुई मां के पीछे भागी। ससुर दूर खड़े चुपचाप उसका कहर देख रहे थे वह जानते थे इस समय वह किसी की नहीं सुनेगी। साक्षी ने गिड़गिड़ाते हुए पांव पकड़ लिए ,'अम्मा ...अम्मा 'मैं घर छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगी मुझे घर में रहने दो ;अम्मा'..... अम्मा ने उसकी छाती पर लात मारते हुए उसे दूर फेंक दिया और चिल्ला कर बोली, 'मनहूस एक तो तीन तीन बेटियाँ पैदा कर दी हमारी छाती पर मूंग दलने को ...ले देकर एक बेटा पैदा किया उसे भी संभाल न पाई। पहले मेरे पुत्र को खा गई फिर मेरे पोते को अब क्या मेरे पति को भी खाएगी ? इससे पहले तू घर से निकल ....निकल अपनी इन मनहूस बेटियों को लेकर... दफा हो जाओ मैं तुम्हें और बर्दाश्त नहीं कर सकती। अब तेरी इस घर में कोई जरूरत नहीं।

वह तो मैं चिराग की खातिर तुझे झेल रही थी अब जब वो ही नहीं रहा तो तुम सब मनहूसों का क्या काम ? सब के सब निकल जाओ मेरे घर से' कहते हुए उसने दरवाजा बंद कर लिया। सारा मौहल्ला तमाशबीन बना इस जुल्म को देखता रहा और साक्षी आंखों में आंसू लिए उन्हें देखती रही। यह वो ही भीड़ थी जो उसके पति के शहीद होने पर घड़ियाली आंसू बहाते हुए नारे लगा रही थी, 'कैप्टन सोमेश अमर रहे' ..'हम तुम्हारे साथ हैं देश को तुझ पर नाज़ है'।

आज नपुंसकों की तरह उसे घर से बाहर होते हुए देख रही थी ..और एक शहीद की पत्नी अपनी बेटियों को साथ लिए वक्त की चुनौतियों से झूझने... अकेले ही... गाँव की पगडंडी पर चलते हुए सोच रही थी.. 'देश के लिए बलिदान देने का उसके परिवार को.... यह सिला'? दूर कहीं संगीत बज रहा था । *'कर चले हम फिदा*
'जान ओ तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' ।

देश सेवा से बढ़कर कुछ भी नहीं

सह संपादक ममता पंडित व संवाददाता दीपक कृष्ण नंदन की बातचीत पर आधारित कर्नल रणविजय सिंह, सेवानिवृत्त का साक्षात्कार...

यूं तो बचपन से ही कर्नल रणविजय सिंह को घर में सैन्य माहौल मिला। इनके पिता लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह ने सेना में अपने काम से अपनी एक विशेष पहचान बनाई। पिता के नक्शे कदम पर चलते इन्होंने अपने सैन्य कार्यकाल में सराहनीय कार्य किया।

कर्नल रणविजय सिंह का जन्म 11 फरवरी 1949 को रतनगढ़ के पास अस्पताल जाते वक्त ऊंटगाडी में हुआ। बचपन से ही कर्नल रणविजय सिंह को पढ़ने में बेहद रुचि थी। मेयो कॉलेज से पढ़ाई करने के बाद ये जयपुर आए और राजस्थान कॉलेज में प्रवेश लिया। यहां से पढ़ाई पूरी करने के बाद सेना में एसएसबी क्लीयर किया, इसके बाद ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकेडमी प्रशिक्षण के लिए गए और 3 दिसंबर 1972 को कर्नल रणविजय सिंह ने सेना में अधिकारी के रूप में कमीशन प्राप्त किया। रणविजय सिंह अपने प्रारंभिक दिनों में सिविल पायलेट बनना चाहते थे इसके लिए सिविल पायलेट ट्रेनिंग कोर्स भी किया।

सैन्य जीवन

कर्नल रणविजय सिंह को गढ़वाल रायफल्स में पहली पोस्टिंग मिली। इसके बाद महू में इंस्ट्रक्टर के रूप में रहे जहां वैपन्स ट्रेनिंग इंस्ट्रक्टर कोर्स में विदेशों (श्रीलंका, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, नाइजीरिया, सूडान , मलेशिया आदि) से कैडेट्स भी प्रशिक्षण के लिए आते थे। तीन वर्ष यहां रहने के बाद कर्नल रणविजय सिंह वापस अपनी पलटन में चले गए। उनकी पलटन तब अहमदनगर में तैनात थी। वहां रणविजय को ट्रेनिंग मेजर के रूप में नियुक्त किया गया। यहां तंबू में रहते थे, कई बार अपने परिवार के साथ भी इन्होंने तंबू में वक्त बिताया। परिवार में इनकी धर्मपत्नी स्व. दमयंती सिंह, दो बेटियां मेघना व संयोगिता तब छोटी थीं। इसके बाद वर्ष 1985 में चाइना बॉर्डर पर पोस्टिंग हुई, यहां तकरीबन छह माह तक ड्यूटी निभाई। इसके बाद वर्ष 1986 में साउथ अफ्रीका में तैनात रह। फिर दो वर्ष के बाद वर्ष 1987 में हिदुस्तान लौटने पर नेशनल सीक्यूरिटी गार्ड में पोस्टिंग मिली। जम्मू कश्मीर में पोस्टिंग के दौरान इनके कार्यकाल में तकरीबन 200 आतंकवादियों ने हाइटेक हथियारों के साथ आत्मसमर्पण किया। उस समय एक दिन में 269 आतंकवादियों मारे गए। इसके बाद जोधपुर में आर्मी कमांडर के पर्सनल स्टाफ ऑफिसर्स में नियुक्ति हुई। इसके बाद जयपुर पोस्टिंग रही तभी ऑपरेशन पराक्रम के आरंभ के समय बाडमेर भी रहे। सेना से सेवानिवृत्ति के समय जयपुर रहे और 28 फरवरी 2003 को सेना से सेवानिवृत्त हुए।

कर्नल अमरदीप सिंह की दो कविताएं

(1)

उन सलाइयों पर
मां बुन रही थी सपने
मैं समझता रहा था स्वेटर
स्वेटर छोटा हो गया
उधड़ गया
उसकी बनावट का
फैशन नहीं रहा
बाजारों में गली की आखिरी
दुकानों पर अब भी मिलती हैं
सलाइयां, क्योंकि हाथ से
बने स्वेटर
भले ही हो गए हों अतीत
का हिस्सा
सपने देखने वाली मांएं
आज भी मिल जाती हैं
खामोशी से कुछ बुददुदाते हुए
सपनों के स्वेटर बनाते हुए...

(2)

चेहरे भी घर हुआ करते हैं
उनमें भी रहा करती हैं
लकीरों में छिपी
कितनी ही कहानियाँ
मुस्कान में दबे
कितने ही दर्द
और आँसुओं के साथ
आँखों मे भरे
लाखों छोटे बड़े ख्वाब

माँ के चेहरे पर
लिखी होती है
आने वाले कल की चिंता
पिता के चेहरे पर
होता है आज का बोझ
दादी पर होती है
टूट रही कड़ियों की आवाज

आप अगर पढ़ पाते
तो समझ जाते बंद कमरों के
भीतर छिपे गीत
जान जाते कि
आती जाती हर भंगिमा के
अपने अलग अलग
स्वर हुआ करते हैं

कभी देखना नज़रों से
दस्तक दे कर
चेहरे भी घर हुआ करते हैं।

कर्नल अमरदीप सिंह,
सेना मेडल (सेवानिवृत्त)
देहरादून

ये हमारी जन्नत दिलकशी...

अनुपम सुंदरता लिए
अपने रूप यौवन पर हर्षित
इस सुन्दर वादी को
किसकी नज़र लग गयी
लम्बे, गगनचुम्बी
चीर, देवदार, चिनार
सब की सुंदरता
किस को खल गयी!

झेलम का कलकल निनाद
है आज भयाक्रांत
पता नहीं धार इसकी भी
बॉट न ले, कोई कहीं
हलचल इसके सीने में भी मच गयी
पता नहीं इस वादी को
किसकी नज़र लग गयी!

श्वेत हिम आच्छादित पर्वत
लाल से दिखने लगे
शहीदों के खून संग
ये भी जमने लगे
कौन अपने कौन पराये
नजर सबकी तंग हो गयी
पता नहीं इस वादी को
किसकी नजर लग गयी

रब ने बनाकर यह जन्नत
कुछ इंसान बसाया था
मजहब का पाठ पढ़
नफरत की लहर बह गई
इंसानियत वहशियत में बदल गयी
पता नहीं इस वादी को
किसकी नज़र लग गयी

लालसा, राजस्व, लोभ, पिपासा
चिनार, देवदार से भी ऊँची हो गयी
जन्नत बनी ये घाटी
आहिस्ता-आहिस्ता
जहन्नुम में परिवर्तित हो गयी
पता नहीं इस वादी को
किसकी नजर लग गयी

खिले मनोरम फूल जहाँ
फलों और केसर की महक वहाँ
उस केसरिया रंग में
रंग कुछ नफरत की भी है घुल गयी
पता नहीं इस वादी को
किसकी नजर लग गयी!

मुलायम बर्फ सी, निष्कपट सी
थी यहाँ की सर जमीं
अखरोट भी जहाँ मुलायम और
कागज़ी, वहाँ बर्बरता, पाखंडता,
लालच है मची
कौन है महफूज़ यहाँ
कहाँ है सबकी खुशी
बस इसी बहस में
चलती जायेगी ये ज़िन्दगी
यूँ ही बन जायेगी जहन्नुम
ये हमारी जन्नत दिलकशी.....।
ये हमारी जन्नत दिलकशी.....।

अनुपमा झा
कोलकाता

ये धरती मांग रही बलिदान

न तू पीछे हटना वीर जवान
मातृभूमि हुई है आज लहू लुहान
बचा ले तू इसकी आन
भले ही हो जाए जीवन कुर्बान
न मिटने पाए इसकी शान

आज पड़ी है देश पर भारी आफत आन
तू आगे ही बढ़ता चल वीर जवान
संग-संग चले हैं आज बच्चे, बूढ़े और जवान
तू अकेला नहीं संग पूरा है देश महान

कभी न नीचे होंगी बंदूकें जो रखी हैं तान
चाहे कितने संकट आएं तू बढ़ता चल वीर जवान
देश हमारा प्यारा तुझसे मांगे आज बलिदान
कभी न मिटने पाए इसकी आन, बान और शान
यह कविता सैन्य पत्नी उषा वर्मा वेदना ने कारगिल युद्ध होने के तुरंत बाद लिखी।

यही तो मेरा हिंद है

रॉबिन के पापा... रिटायर्ड कर्नल विजेंद्र थापर, शहीद कैप्टन विजयंत थापर के पिताजी । अल्का कर्नल एम एन राय की सुपुत्री हैं कर्नल राय ने कश्मीर में आतंकवादियों के खिलाफ लड़ते लड़ते अपनी देह इस देश पर न्योछावर कर दी थी।

जहाँ शिथिल नसों में,
दौडती रॉबिन के पापा की जिद है।
यही तो मेरा हिंद है।
जहाँ अलका की मासूम सलामी में
हिम्मत और जज़्बा अनहद है।
यही तो मेरा हिंद है।
कई अनकही कहानियों पर,
मग़रूर इसकी सरहद है।
यही तो मेरा हिंद है।
कुछ ख़ामियां जरूर है,
पर यह मेरा गुरूर है।
यही तो मेरा हिंद है।

नित्या शुक्ला
इंदौर, मध्य प्रदेश

एक फौजी मेरी प्रेरणा

एक फौजी की गाथा मैं सुनाती हूं
इनके शौर्य और बलिदान के गीत गाती हूं
एक फौजी को अपनी प्रेरणा मैं मानती हूं
देश ही इनका गौरव और देशवासी ही इनकी जान
बहादुरी बसी नसों में इनकी
देश सेवा इनकी आन-बान और शान
देश प्रेम और साहस दृढ़ निश्चय में ये ढले
खतरों से हमें बचाने कठिन राह पर ये चले
कोई भी काम असंभव नहीं इनको
जलते अंगारों पे ये चल जाते हैं
अपनी जान हथेली पर रखकर
हम सबकी जान बचाते हैं
आंधी हो या तूफान
न रुके इनकी उड़ान
मायूसी के बादलों के बीच
लाते हैं ये साहस और दोस्ती का प्रकाश
डरे सहमे लोगों को राह ये दिखाते हैं
देते उनका साथ गिरते हुए को उठाते हैं
इनके फौलादी हाथ

ये फौजी मेरी प्रेरणा हैं, बस सबसे यही कहना है
इनके त्याग और बलिदान को हमेशा याद हमें करना है
ईश्वर को याद करते समय इनके लिए भी सर झुका लो
और कुछ न कर सके तो बस यही करना है
इनके नाम एक दीप हमें जलाना है
इनकी शौर्य गाथा की माला में मोती कम पड़ जाते हैं
हम देशवासियों के लिए हंसते-हंसते ये जान दे जाते हैं
अपने पीछे पूरा परिवार ये छोड़ जाते हैं
और हम लोग इस परिवार का गम भूल जाते हैं
खुली हवा में सांसे लेना उपहार है इनका मैं जानती हूं
एक फौजी को मैं अपनी प्रेरणा मानती हूं
दिल से दुआ बस यही निकलती है
सलामत रहे हर फौजी की ज़िन्दगी।

तमन्ना बी कुकरेती
महाराष्ट्र

नित्या शुक्ला
समीक्षक

पाठकों से बेहतर संवाद करती 'पाल ले इक रोग नादां'

पुस्तक: पाल ले इक रोग नादां
लेखक : गौतम राजऋषि
प्रकाशक का नाम : हिंदी युग्म
मूल्य : 100

मैं गौतम राजऋषि जी को व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानती बस उनके शब्दों, गजलों और कहानियों के द्वारा ही उनको जानना हो पाया है। मुझे विश्वास है कि भले ही मैं उन्हें व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानती लेकिन विचारों के स्तर पर में पहचान गई हूं। और यही सबसे अच्छी जान पहचान है क्योंकि जब शब्द और विचारों से जान-पहचान हो जाती है तो भौतिक जान-पहचान मायने नहीं रखती। गौतम जी किस्सागो भी बहुत अच्छे हैं पर आज मैं बात करूंगी उनकी किताब 'पाल ले इक रोग नादां' के बारे में जो बेस्टसेलर की श्रेणी में आ चुकी है। जिस किताब के बारे में राहत इंदौरी साहब और मुनव्वर राणा साहब लिख चुके हैं, उस किताब के बारे में लिखना तो सूरज को दिया दिखाने के बराबर ही होगा, पर सूरज को यह दिया दिखाने का हौसला भी मेरे अंदर गौतम जी के शेर से ही आया है

उकसाने पर हवा के
आंधी से भिड़ गया है,
मेरे चिराग का भी
मुझसा ही हौसला है।

गौतम राजऋषि फौज में कार्यरत कर्तव्य परायण सैनिक तो हैं ही, एक बेहद ही संवेदनशील ग़ज़लकार भी हैं। उनका अपना ही एक बेबाक तरीका है अपनी बात रखने का। पर बेबाक का मतलब आप यहां धृष्टता से नहीं लगाइएगा। बेबाक बातें शिष्टता से भी रखी जा सकती हैं, यह गौतम राजऋषि की ग़ज़लों में पूर्ण रूप से जाहिर है। इस बेबाक शिष्टता पूर्ण शेर पर नजर डालिए-

कांपती रहती है
कोहरे में ठिठुरती झुग्गियां,
धूप महलों में न जाने
कबसे अटकी हुई ।
हुक्मरानों से कभी रौशन था
अपना मुल्क ये,
छोड़िए उस बात को
वो बात अब कल की हुई।

एक और बानगी

आईनों पर आज जमी है काई लिख,
झूठे सपनों की सारी सच्चाई लिख ,
जलसे में तो खुश थे सारे लोग मगर,
क्या जाने क्यों रोती थी शहनाई लिख।

गौतम राजऋषि की शायरी की सबसे बड़ी खूबी है कि उनकी भाषा कभी भी पाठकों को भारी भरकम लफ्जों के बोझ के तले नहीं दबाती, बल्कि उनकी ग़ज़लें तितलियों जैसे आहिस्ता से फूलों की पंखुड़ियों को सहलातीं है। उनके शेर पढ़ते-पढ़ते हौले से आपके दिल में जगह बना लेते हैं। जरा इन शेरों की पाक रूमानियत पर नजर डालिए

नाम तेरा कभी आने ना दिया होठों पर,
हाँ तेरे जिक्र से कुछ-कुछ शेर सँवारे यूँ तो।
रात भर चांद को यूं रिझाते रहे,
उनके हाथों का कंगन घुमाते रहे।

गौतम ने रोजमर्रा के प्रतीकों को अपने शेरों से नई ऊंचाई दी है नए-नए और मॉडर्न शब्दों का प्रयोग किया है । यही प्रयोग उन्हें अपने समकालीन शायरों से अलग करता है। गौतम जी ने नए शब्दों का जिस तरह से बिल्कुल सही जगह पर संतुलन के साथ प्रयोग किया है ऐसी लेखनी दिमाग से नहीं लिखी जा सकती ऐसी लेखनी के लिए दिल और संवेदना का सही जगह पर होना बहुत जरूरी है। मॉडर्न शब्दों के प्रयोग का यह संतुलन देखिए

चार दिन होने को आए
कॉल इक आया नहीं,
चुप्पी मोबाइल की अब
बेचैनियों में आ गई।

जो धुन निकली हवा की सिम्फनी से,
हुआ है चांद पागल आज उसी से।

हिंदी उर्दू के लगभग सभी शायरों ने शाम या संध्या का वर्णन अपनी कविता या ग़ज़ल में जरूर किया है पर एक शेर में गौतम ने जिस तरह शाम के आने को दर्शाया है वह अपने आप में अद्भुत है

धूप लुटा कर सूरज जब कंगाल हुआ
चांद उगा फिर अंबर मालामाल हुआ

किताब पढ़ते समय यह बात आप चाह कर भी दिमाग से नहीं निकाल पाएंगे कि किताब लिखने वाला एक सैनिक है और सैनिक की मन:स्थिति को बेहतरीन तरीके से कलम के माध्यम से गौतम ने कागज पर उकेरा है। इन शेरों पर गौर फरमाइए

ट्रेन ओझल हो गई
एक हाथ हिलता रह गया,
वक्त ए रुखसत की उदासी
चूड़ियों में आ गई ।

होती हैं इनकी बेटियां
कैसे बड़ी रहकर परे,
दिन-रात इन मुस्तैद
सीमा प्रहरियों से पूछ लो।

घड़ी तुम को सुलाती है,
घड़ी के साथ चलते हो,
जरा सी नींद क्या चीज है,
पूछो एक सिपाही से।

चीड़ के जंगल खड़े थे
देखते लाचार से,
गोलियां चलती रहीं
इस पार से उस पार से।

शायरों ने हजार तरह की मनस्थितियां कागज पर उतारी हैं पर गौतम जी का अंदाज बिल्कुल ही जुदा है क्योंकि उनकी अभिव्यक्ति में निजता का भाव है। गौतम जी की ग़ज़लों में सामाजिक सरोकार भी जिम्मेदारी के साथ नजर आता है। उनकी अभिव्यक्ति में एक सीमा प्रहरी की सामाजिक संचेतना का स्वर भी बखूबी निखर कर आता है। जरा हुक्मरानों को इंगित करते इस शेर पर जरा नजर डालिए

जो हुआ सब उन्हीं के इशारे हुआ,
कौन हाकिम पर लेकिन यह इल्जाम दे।

एक और सैनिक का अपने साथियों को खो देने की बेबसी जाहिर करते ये शेर देखिए

अब शहीदों की चिताओं पर
न मेले लगते हैं,
है कहां फुर्सत जरा भी
लोगों को घर बार से ।
मुठिया भींचे हुए
कितने दशक बीतेंगे और ,
क्या सुलझता है कोई मुद्दा
कभी हथियार से।

और एक कवि किस तरह अपनी कलम को इस्तेमाल कर आपके अंदर जोश का संचार कर सकता है उनकी इन पंक्तियों में साफ जाहिर है ....

एक कलम संवाद कर,
शब्दों को जिंदाबाद कर।
मुट्ठी उठा नारे लगा,
आवाज को आजाद कर।
कह ले ग़ज़ल या नज़्म लिख,
दिल का नगर आबाद कर।

गौतम की ग़ज़लें इसलिए भी पाठकों के हृदय तक पहुंचती है क्योंकि ये ग़ज़लें ग़ज़लकार के मौलिक इजहार की एक ईमानदार कोशिश है। और ईमानदार कोशिशें को दिल तक पहुंचने में कभी भी विफल नहीं होतीं हैं।

पाल ले इक रोग नादां गजल संग्रह में 111 ग़ज़लें हैं और हर ग़ज़ल अपने आप में अलग है। पुस्तक की समीक्षा के लिए मेरे शब्द कम पड़ जाएंगे। क्यूंकि हर ग़ज़ल अपने आप में बेहतरीन है। कुल मिलाकर यह ग़ज़ल संग्रह 111 मूल्यवान माणिकों की माला है, और हर ग़ज़ल प्रेमी के लिए एक सहेजने वाली धरोहर । अंत में देश की कश्ती संभालने वाले उस सैनिक को समर्पित उनका एक शेर

मूर्तियां बन रहे गए वह
चौक पर, चौराहे पर
खींच लाए थे जो
किश्ती मुल्क की मझधार से

जय हिंद

एक मन्नत
मांग आई हूं
एक धागा
बांध आई हूं...
मेरे अक्षरों को रंग और
मेरे रंगों को अक्षर देना।

निर्मला सिंह
नोएडा, उ.प्र.

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 50,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 6,500
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 4,500

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा: कनक विहार,
हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम- 9887409303
दूरभाष- 9887409303

'ऐ रात जरा आहिस्ता गुजर' जे.पी.कौशिक

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार
मो. 9821394486

स्वतंत्रता सेनानी, भारतीय वायुसेना के सेवानिवृत्त अधिकारी, मंझे हुए तैराक, कसरत के शौकीन और एक उत्कृष्ट संगीतकार...ये है परिचय वयोवृद्ध जगफूल कौशिक का, जिन्हें हिंदी फिल्म संगीत प्रेमी जे.पी.कौशिक के नाम से जानते हैं। लेखक-निर्माता-निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास की साल 1963 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'शहर और सपना' से अपने करियर की शुरुआत करने वाले संगीतकार जे.पी. कौशिक के हिस्से में भले ही गिनी-चुनी फिल्में आई हों लेकिन अपने काम की गुणवत्ता के साथ उन्होंने कभी भी समझौता नहीं किया।

मूल रूप से हरियाणा के रोहतक जिले के परहावर गांव के रहने वाले, और पुलिस विभाग में नौकरी कर रहे कौशिक के दादा अपना गांव छोड़कर रोहतक शहर में आ बसे थे। कौशिक के पिता डनलप कम्पनी में सुपरवाईजर थे। 12 अक्टूबर, 1924 को रोहतक शहर में जन्मे और पले-बढ़े कौशिक ने गौड़ हाईस्कूल से फर्स्ट डिविजन में मैट्रिक पास करने के बाद रोहतक के ही गवर्नमेण्ट कॉलेज में 11वीं में दाखिला ले लिया था। कौशिक बताते हैं, 'उन दिनों आजादी की लड़ाई अपने चरम पर थी, जिससे मैं भी अछूता नहीं रह पाया। 11वीं की पढ़ाई अधूरी छोड़कर मैं भी आजादी की लड़ाई में कूद पड़ा। फिर कुछ ही समय बाद मुझे भारतीय वायुसेना में नौकरी मिली तो अपनी पहली पोस्टिंग पर मैं लाहौर चला गया। 8 जनवरी, 1943 को जब मैंने नौकरी ज्वॉईन की थी तो उस समय मेरी उम्र 18 साल थी। चूंकि उन दिनों नाम के आगे सिंह लगाने का रिवाज था इसलिए सरकारी कागजात में मैंने भी अपना नाम जे.पी. सिंह लिखाया था, जो मेरे पेंशन के खातों में आज भी बदस्तूर चला आ रहा है।'

संगीत का शौक कौशिक को विरासत में मिला था। बचपन से जहां वो एक तरफ अपने दादा को होली के गीत गाते देखते-सुनते आए थे वहीं दूसरी तरफ उनके पिता को भी हारमोनियम पर गाने का बेहद शौक था। नौकरी लगने पर पिता का वो ही हारमोनियम कौशिक का साथी बन गया। आज वो हॉरमोनियम परिवार की चौथी पीढ़ी यानि कौशिक के बेटे संगीतकार बेटे सुनील कौशिक की बड़ी बेटी नीमा के पास है। कौशिक बताते हैं, 'लाहौर, अम्बाला, कोहाट, कराची, पूर्वी-पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) का फैनी, बर्माफ्रण्ट, जोधपुर, मद्रास, जहां-जहां पोस्टिंग हुई, वो हरमोनियम मेरे साथ ही रहा। कराची पोस्टिंग के दौरान क्लब में वॉयलिन पर नजर पड़ी तो वो भी प्रैक्टिस करते-करते मैंने खुद ही सीख ली। मेरा गायन और वादन

वायुसेना के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अभिन्न अंग हुआ करता था। लेकिन संगीत मेरे लिए महज एक शौक था, इसे रोजी-रोटी का जरिया बनाने की बात मैंने कभी नहीं सोची थी। फिल्मों में जाने की बात जहन में तब आई जब मेरे सहकर्मी मित्र मुझे इसके लिए प्रेरित करने लगे।'

कौशिक के ऐसे ही एक सहकर्मी थे के.पी.एस. टण्डन जो कौशिक के लिए हाथरस स्थित मशहूर संगीत कार्यालय से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सम्बन्धी पुस्तकें मंगाकर उन्हें भेंट करते थे। टण्डन बहुत जल्द नौकरी छोड़कर वापस अपने शहर देहरादून चले गए थे। कौशिक आज भी उन्हें याद करते हुए कहते हैं कि मेरे फिल्मी दुनिया में आने के बाद अगर कभी टण्डन ने मेरे विषय में पढ़ा-सुना भी होगा तो वो मुझे पहचान नहीं पाए होंगे क्योंकि मुझे वो जे.पी. कौशिक के नहीं जे.पी.सिंह के नाम से जानते थे। मैं आज भी उनसे या उनके परिवार से मिलने के लिए बेताब हूं।

देश के विभाजन के समय कौशिक कराची में पोस्टेड थे। विभाजन के बाद उन्हें जोधपुर भेज दिया गया जहां उनकी मुलाकात वायुसेना के एक कार्यक्रम में शामिल होने आए सरोद-वादक उस्ताद अली अक़बर खां साहब से हुई जो उस ज़माने में जोधपुर दरबार के राज-संगीतकार हुआ करते थे। कौशिक ने उस्ताद अली अक़बर खां से विधिवत रुप से संगीत सीखना शुरु कर दिया। उस्ताद के कहने पर कौशिक ने सरोद के बजाय वॉयलिन को ही अपनी संगीत शिक्षा का माध्यम बनाए रखा। उसी दौरान कौशिक की दोस्ती सचिनदेव बर्मन और जयदेव जैसे धुरन्धर संगीतकारों से हुई जो अक्सर उस्ताद अली अकबर खां से मिलने के लिए जोधपुर आते रहते थे। करीब 4 साल उस्ताद अली अकबर खां साहब की शागिर्दी में गुजारने के बाद कौशिक अगली पोस्टिंग पर मद्रास चले आए जहां उनकी मुलाकात कथाकली के गुरु गोपीनाथ और थंगामणी, शास्त्रीय गायक सुब्रह्मण्यम अय्यर, भरतनाट्यम नृत्यांगना बाला सरस्वती और उस्ताद अमीर खां साहब से हुई। कौशिक कहते हैं, 'वो दौर मेरे जीवन का स्वर्णिम दौर था जब मुझे ऐसे महान और गुणी फनकारों का साथ मिला।'

दो महीने की सालाना छुट्टियों में कौशिक हर साल मुम्बई चले आते थे। वो बताते हैं, 'उस दौरान मैं अपना ज्यादातर समय सचिनदेव बर्मन और जयदेव की रेकॉर्डिंग्स पर गुजारता था। इस तरह बिना किसी को असिस्ट किए धीरे-धीरे मैंने फिल्म संगीत से सम्बन्धित तमाम तकनीकी जानकारियां हासिल कर ली थीं।'

19 जुलाई, 1959 को नौकरी से त्याग-पत्र देकर जे.पी. कौशिक मुम्बई चले आए, जहां अपने गुरूभाई जयदेव की सलाह पर वो गायक मुकेश से मिले। उन्होंने मुकेश की आवाज में एक एच.एम.वी. की एक प्राईवेट अलबम के लिए दो गीत 'आज गगन से चंदा उतरा' और 'बात अधूरी रह गयी' संगीतबद्ध किए जिनके गीतकार थे मधुकर राजस्थानी। इससे उन्हें थोड़ी-बहुत पहचान मिली और गुरुदत्त, मोहन सहगल, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजिन्दर सिंह बेदी, पं. मुखराम शर्मा, अली सरदार जाफरी, कैफी आजमी और साहिर जैसे जहीन फिल्मकारों और लेखकों से उनका मिलने-जुलने का सिलसिला शुरु हो गया। कौशिक कहते हैं, 'संघर्ष के उस दौर में चंडीगढ़ में रहने वाले मेरे दोनों छोटे भाईयों हरफूल कौशिक और मनफूल कौशिक ने मेरी हर तरह से मदद की। न तो उन्होंने मुझे पैसे की कमी महसूस होने दी और न ही कोई ऐसा मौका आने दिया कि मुझे पत्नी-बच्चों की चिंता करनी पड़े। जब तक मैं मुंबई में पूरी तरह से जम नहीं गया, मेरे पत्नी-बच्चे उनके परिवार के बीच रहे। मेरे बच्चों की शुरूआती पढ़ाई-लिखाई भी चंडीगढ़ में ही हुई।'

मद्रास में कौशिक की मुलाकात जैमिनी स्टूडियो की फिल्म इंसानियत की शूटिंग में शामिल होने के लिए आए फिल्म के लेखक रामानन्द सागर और अभिनेता मनमोहन कृष्ण और गजानन जागीरदार से हुई थी जो जैमिनी गेस्ट हाऊस में ठहरे हुए थे। मुम्बई आने के बाद मनमोहन कृष्ण और जागीरदार से कौशिक का सम्पर्क बना रहा। मनमोहन कृष्ण एक बहुत उम्दा गायक भी थे। एक रोज उन्होंने कौशिक को एक नज़्म गाकर सुनाई। कौशिक ने तुरंत उस नज़्म को नयी धुन में ढाल दिया जो मनमोहन को इतनी पसन्द आई कि उन्होंने कौशिक से एक और नज़्म की धुन बनाने को कहा और फिर दोनों नज़्मों को अपनी आवाज में टेपरेकॉर्ड पर रेकॉर्ड कर लिया। कौशिक कहते हैं, 'रेकॉर्ड करने के बाद मनमोहन कृष्ण ने मुझे बताया कि ये दोनों नज़्में वो ख्वाजा अहमद अब्बास की आने वाली फिल्म 'शहर और सपना' में गाने वाले थे। अब्बास को भी मेरी बनायी धुनें इतनी पसन्द आयीं कि उन्होंने 'शहर और सपना' के संगीत की जिम्मेदारी मुझे दे दी, हालांकि काफी पहले काम मांगने पर वो मुझसे कह चुके थे कि उनके बैनर के स्थायी संगीतकार अनिल बिस्वास हैं जिनकी जगह किसी और संगीतकार को लेना उनके लिए मुमकिन नहीं होगा।' अनिल बिस्वास इससे पहले न केवल अब्बास की 'मुन्ना', 'राही', 'परदेसी' और 'चार दिल चार राहें' जैसी कई फिल्मों में संगीत दे चुके थे बल्कि फिल्म 'शहर और सपना' के लिए भी दो गीत रेकॉर्ड करा चुके थे, जिन्हें बाद में फिल्म से निकाल दिया गया।

अली सरदार जाफरी की लिखी, मनमोहन कृष्ण की गाई और जे.पी. कौशिक द्वारा संगीतबद्ध वो दोनों नज़्में 'ये शाम भी कहां हुई' और 'प्यार को

आज नयी तरह निभाना होगा' अपने दौर में बेहद सराही गयी थीं। इस तरह 1963 में बनी फिल्म 'शहर और सपना' से कौशिक के करियर की शुरुआत हुई।

'शहर और सपना' साल 1963 की सर्वश्रेष्ठ फिल्म के राष्ट्रपति पुरस्कार के साथ ही बंगाल जर्नलिस्ट एसोसिएशन का भी पुरस्कार हासिल करने में कामयाब रही थी। राष्ट्रपति पुरस्कार समारोह में अब्बास फिल्म की पूरी यूनिट को साथ लेकर दिल्ली गए थे। समारोह के दौरान पण्डित जवाहरलाल नेहरु ने अब्बास को बच्चों के लिए भी फिल्म बनाने की सलाह दी। इस पर अमल करते हुए अब्बास ने फिल्म 'हमारा घर' बनाई। साल 1964 में प्रदर्शित हुई इस फिल्म के लिए कौशिक ने चार गीत संगीतबद्ध किए। ये गीत थे, नवोदित विद्या मजूमदार के गाए 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा', 'चले हवा पुरवाई', 'राजाजी पछताएंगे' और महेन्द्र कपूर का गाया 'तुझको अपनी दुनिया आप बनानी है'। इस फिल्म का एक शो खासतौर पर तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के लिए भी रखा गया था जिसमें फिल्म से जुड़े सभी बाल-कलाकारों और तकनीशियनों के अलावा तत्कालीन उपराष्ट्रपति जाकिर हुसैन भी शामिल हुए थे। इस फिल्म में कौशिक के बेटे सुनील और अभिनेत्री नीलिमा अजीम के भाई पाशा अजीम ने भी बतौर बाल कलाकार अभिनय किया था जो रिश्ते में अब्बास के नाती थे।

1965 में प्रदर्शित हुई अब्बास की फिल्म 'आसमान महल' में कौशिक ने 'खूबसूरत है तेरी तरह शिकायत तेरी' (महेन्द्र कपूर), 'तूने समझी ही नहीं क्या है हकीकत मेरी' (विद्या मजूमदार) और 'मैं आहें भर नहीं सकता' (महेन्द्र कपूर, विद्या मजूमदार) के अलावा मुजरा गीत 'ऐ रात जरा आहिस्ता गुजर' में पहली बार गीता दत्त की आवाज का इस्तेमाल किया। इस गीत का शुमार आज भी गीता दत्त के सर्वश्रेष्ठ गीतों में किया जाता है। इस गीत में गीता का साथ दिया था गायक-अभिनेता मधुकर ने जो इस गीत में फकीर के रूप में तो नजर आए ही थे, खुद पर फिल्माई गयी इस गीत की पंक्तियां भी उन्होंने खुद ही गाई थीं। अब्बास की ही फिल्म 'सात हिन्दुस्तानी' में अभिनय करने के बाद वो मद्रास चले गए थे जहां कुछ साल पूर्व एक मोटरसाईकिल दुर्घटना में उनका निधन हो गया।

गीता दत्त को याद करते हुए कौशिक कहते हैं, 'उस वक्त गीता अपनी जिन्दगी के सबसे मुश्किल दौर से गुजर रही थीं। गुरुदत्त को गुजरे ज्यादा समय नहीं हुआ था। बच्चे छोटे थे। निजी तौर पर मुझे उनकी आवाज और गायकी बहुत पसन्द थी लेकिन उनसे गवाने के मेरे फैसले का थोड़ा विरोध हुआ। पूछने पर महबूब स्टूडियो के साउण्ड रेकॉर्डिस्ट आर.कौशिक ने बताया कि गीता अब ज्यादातर नशे की हालत में रहती हैं और गाते गाते अक्सर भूल जाती हैं। लेकिन मैं अपने फैसले पर अडिग रहा। रेकॉर्डिंग से पहले मैंने गीता से उस गीत की खूब रिहर्सल कराई। उस दौरान मैंने यही पाया कि निजी जिन्दगी में तमाम दुखों के बावजूद गीता एक बेहद सभ्य, सुसंस्कृत, मधुर स्वभाव की और कलात्मक अभिरुचि वाली महिला थीं, जिनके बारे में कही-सुनी जा रही विपरीत बातों में सच्चाई कम, अफवाहें ज्यादा थीं। आगे चलकर मैंने गीता से बालचित्र समिति की फिल्म 'बन्दर मेरा साथी' के लिए एक लोरी 'नानी कहती थी एक कहानी' भी गवाई।'

फिल्म 'बन्दर मेरा साथी' में कौशिक ने गायिका शांति माथुर से भी दो बालगीत गवाए थे। 1969 में ख्वाजा अहमद अब्बास की दो फिल्में प्रदर्शित हुईं। ये थीं 'बम्बई रात की बाहों में' और 'सात हिन्दुस्तानी', जिनका संगीत जे.पी.कौशिक ने तैयार किया था। फिल्म 'बम्बई रात की बाहों में' के चारों गीत हसन कमाल ने लिखे थे। इस फिल्म का शीर्षक गीत आशा भोंसले ने गाया था। अन्य गीत थे, 'दिल जो दुनिया के गमोदर्द से घबराया है' (महेन्द्र कपूर, सुलक्षणा पण्डित), 'उसने जो कहा मुझसे एक गीत' (कृष्णा कल्लै) और 'जलती हुई जवानियां' (महेन्द्र कपूर)। इस फिल्म के लिए कौशिक को उत्तरप्रदेश जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा साल 1969

के सर्वश्रेष्ठ संगीतकार के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उधर 'सात हिन्दुस्तानी' में, जिससे अमिताभ बच्चन ने अपने करियर की शुरुआत की थी, कौशिक ने कैफी आजमी के लिखे गीत 'आंधी आए या तूफान कोई गम नहीं' को सुरों में ढाला था। फिल्म में बार-बार बजने वाले इस गीत को महेन्द्र कपूर ने गाया था।

ख्वाजा अहमद अब्बास की फिल्मों के अलावा जे.पी.कौशिक ने निर्माता-निर्देशक राजिन्दरसिंह बेदी की अप्रदर्शित फिल्म 'आंखिन देखी', राजदीप की 'बस्ती और बाजार' (1973), निर्माता सुखदेव धमीजा की जगदीश द्वारा निर्देशित 'धमाका' (1980), निर्माता हरीश कटारिया की राजदीप द्वारा निर्देशित 'सिस्टर' (1980) और सुमित्रा-सतीश की 'सांझी' (1985) के अलावा हरियाणवी बोली में बनी बहुरानी, चन्द्रावल, पनघट, लम्बरदार, धनपराया, बटेहू, फूलबदन, तकदीर की तकरार, लाड्डो बसंती, बैरी, चन्द्रकिरण, छोरी सपेले की और छोरी नट की, राजस्थानी बोली की धरम भाई और लाड्डो रानी और गुजराती भाषा की 'मारी लाज राखजे वीरा' जैसी कई फिल्मों में संगीत दिया। इन सभी फिल्मों का संगीत अपने वक्त में बेहद लोकप्रिय हुआ। फिल्म चन्द्रावल के गीत 'जीजा तू काला मैं गोरी घणी' और 'मेरा चुन्दड़ मंगा दे रे ओ ननदी के वीरा' आज भी समूचे उत्तर भारत में शादी-ब्याह में जोर-शोर से गाये-बजाये जाते हैं। हरियाणवी लोक संगीत पर आधारित 'मेरा चुन्दड़ मंगा दे रे' की जबर्दस्त कामयाबी ने ही बप्पी लाहिड़ी को इस गीत की धुन पर फिल्म शराबी का हिट गीत 'मुझे नौलखा मंगा दे रे ओ सैयां दीवाने' बनाने के लिए प्रेरित किया था।

मन्ना डे, रफी, महेन्द्र कपूर, आशा भोंसले और गीता दत्त जैसे नामचीन गायक-गायिकाओं के साथ-साथ कौशिक ने सुलक्षणा पण्डित, कृष्णा कल्लै, विद्या मजूमदार, बेला सावर, भूपेन्द्र, अनुराधा पोडवाल, दिलराज कौर और प्रीति सागर जैसे उस दौर के उभरते हुए फनकारों की आवाज का भी अपने गीतों में बखूबी इस्तेमाल किया। फिल्म 'सांझी' में अनुराधा पोडवाल से उन्होंने 'बादल उठा री सखी सासरे कि ओर', दिलराज कौर से 'तेरे मुखड़े पे जम गयी नजरिया' और भूपेन्द्र से 'रात में तारों भरी तारों की अंजुमन' जैसे गीत गवाए तो 'आंखिन देखी' के 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई' में रफी और इसी फिल्म के सुपरहिट युगल गीत 'सोना रे तुझे कैसे मिलूं' में रफी और सुलक्षणा पण्डित की आवाज का इस्तेमाल किया। फिल्म 'बस्ती और बाजार' का गीत 'हम तो मनमौजी' महेन्द्र कपूर और सुलक्षणा पण्डित ने, 'ऐ जानेमन नादां न बन' बेला सावर ने तो 'हम पत्थर हैं हम नहीं रोते' मन्ना डे और बेला सावर ने गाया था। बेला सावर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की जानी-मानी संगीतकार-गायिका आशा पुतली की बहन हैं। फिल्म 'धमाका' का गीत 'है मुकाबला इंसान का शैतान से' भूपेन्द्र की और 'ओ लालपरी बन्द कली' बेला सावर और महेन्द्र कपूर की आवाजों में था तो 'मेरी आंखों में शोले' आशा भोंसले ने गाया था। फिल्म 'सिस्टर' में आशा भोंसले ने 'न टूटी कोई खिड़की विड़की' गाया तो सुलक्षणा पण्डित ने 'सच्चा जिसका प्यार जहां में' और प्रीति सागर ने इसी गीत का एक अन्य वर्जन गाया था। इस फिल्म का एक बेहद खूबसूरत गीत 'तू अकेला नहीं तेरे जैसे कई लोग हैं' रफी की आवाज में था। अली सरदार जाफरी के अलावा कौशिक ने जिन अन्य गीतकारों के गीतों को सुरों में ढाला उनमें प्रमुख हैं, नक्श लायलपुरी, हसन कमाल, निदा फाजली, नियाज हैदर, सूरज भारद्वाज, महेन्द्र देहलवी और पद्मा सचदेव। फिल्म संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 30 अप्रैल 2010 को मुम्बई स्थित दादा साहब फाल्के एकेडमी द्वारा उन्हें लाईफटाईम अचीवमेण्ट एवॉर्ड से सम्मानित किया गया था।

जे.पी.कौशिक चार बेटों में सबसे बड़े सतीश डॉक्यूमेण्ट्री फिल्म मेकर हैं तो सुनील फिल्मोद्योग के जाने-माने गिटारवादक, संगीतकार और अरेंजर, जिन्हें मराठी फिल्म 'चेकमेट' के संगीत के लिए साल 2008 के शांताराम पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। तीसरे बेटे स्वर्गीय सुरेन्द्र इम्पोर्ट-एक्स्पोर्ट मैनेजर थे और सबसे छोटे संजय ने बतौर एसोसिएट डायरेक्टर सुखवंत ढड्ढा और अजय कश्यप की कई फिल्में की थीं। संजय का निधन 19 दिसंबर 2010 को हुआ।

जे.पी.कौशिक की पत्नी कौशल्या का निधन 1984 में हुआ था। कुछ समय पहले तक वो स्वर्गीय सुरेन्द्र की पत्नी-बच्चों के साथ सांताक्रुज में रहते थे। फिर वो बड़े बेटे सतीश के साथ मीरा रोड पर रहने लगे। जीवन के 9 दशक पूरे करने के बावजूद शारीरिक तौर पर काफी हद तक चुस्त-दुरुस्त कौशिक कहते थे, 'कसरत का शौक मुझे बचपन से था। एयरफोर्स की नौकरी के दौरान मैंने तैराकी भी सीखी। मेरी फिटनेस का राज संतुलित आहार, व्यसन रहित जीवन, कसरत और तैराकी ही हैं। संगीत से मेरा जुड़ाव आज भी बरकरार है और कुछ समय पहले मैंने हरियाणवी फिल्म 'कुणबा' के लिए दो गीत संगीतबद्ध किए थे। जीवन में मैंने जो भी थोड़ा-बहुत हासिल किया है उसका श्रेय अगर मैं दूंगा तो वो हैं उस्ताद अली अकबर खां साहब, एयरफोर्स के मेरे सहयोगी के.पी.एस. टण्डन और ख्वाजा अहमद अब्बास, जिन्होंने हर कदम पर मेरा साथ दिया।'

जे.पी.कौशिक जी का निधन मुम्बई में 14 मार्च 2017 को 93 साल की उम्र में हुआ।

फिर से मौका मिले तो फौज में जाना ही पसंद करूंगा

लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी (सेवानिवृत्त)

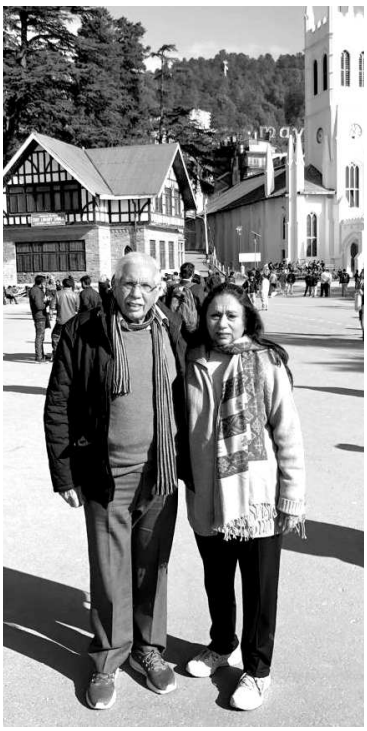

रोहित कृष्ण नंदन

उत्तरप्रदेश के लखनऊ शहर में जन्मे लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी (सेवानिवृत्त) से हमारी विशेष मुलाकात जयपुर के प्रसिद्ध समाजसेवी सुधीर माथुर के निवास स्थान 'मालार्पण' में हुई। जब आप किसी सकारात्मकता से भरे व्यक्तित्व से रूबरू होते हैं तो आपको स्वत: ही इस बात का आभास होने लगता है। ठीक ऐसा ही आभास हुआ लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी से मिलने पर। बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ा।

बचपन से ही मोहिंदर पुरी मेधावी तो थे ही साथ ही सामाजिकता भी उनमें कूट-कूट कर भरी थी। मोहिंदर पुरी जब 16 वर्ष के हुए तो उन्होंने एनडीए की परीक्षा उत्तीर्ण की, उनसे पहले उनके बड़े भाई केवल पुरी भी एनडीए की परीक्षा पास कर चुके थे। एनडीए में अपनी पूरी लगन व मेहनत से हर क्षेत्र में खुद को साबित किया और इसके बाद गोरखा बटालियन में जून 1966 में अरुणाचल प्रदेश में सैन्य अधिकारी के रूप में कमीशन प्राप्त किया।

संघर्ष और कड़ी मेहनत ही सफलता है

मोहिंदर पुरी बताते हैं कि मेरे पिता सेना में मेजर के पद पर कार्यरत थे, जब मैं 12 वर्ष का हुआ तो पिता स्व. मेजर एस.एल. पुरी का देहांत हो गया। जब छोटी उम्र में पिता का साथ छूट जाता है तो उस पीड़ा को बयां कर पाना बहुत मुश्किल है। कई बार विपरीत परिस्थितियां जीवन में आती हैं तो आप उन्हें सीढ़ी बनाकर चढ़ें, यकीन मानिए आप हर मंजिल को पा जाएंगे क्योंकि कड़ी मेहनत का कोई विकल्प है ही नहीं।

कारगिल युद्ध में
8वीं माउंटेन डिविजन का नेतृत्व

लेफ़्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी बताते हैं कि जब देश कारगिल युद्ध लड़ रहा था उस समय यह 8वीं माउंटेन डिविजन का नेतृत्व करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मुझे मिली जिसे हम सभी सैन्य साथियों ने मिलकर बड़ी शिद्दत से निभाया। 'ऑपरेशन विजय' के दौरान द्रास (मुशकोह) पर दुश्मन 18000-19000 फुट की ऊंचाई पर चोटियों (टाइगर हिल आदि) पर कब्जा कर के बैठा था, इस कठिन युद्ध को न केवल भारतीय सेना ने जीता बल्कि पाकिस्तान को उल्टे पैर भागने के लिए मजबूर कर दिया। भारतीय सेना का हौसला व जज्बा ही था जिसने इस मुश्किल युद्ध को जीत में तब्दील किया। उस समय सेना के पास कोई हाईटेक हथियार नहीं थे जिससे वो दुश्मन को चौंका सके। बोफोर्स तोपों की तैनाती इस जंग में सबसे ज्यादा मददगार साबित हुई। पहली बार हम दुश्मनों के करीब तक हमला कर पाने में सक्षम हुए। बोफोर्स तोपों की ताबड़तोड़ फायरिंग के बाद जहां दुश्मनों की तबाही का दौर शुरू हुआ वहीं इससे भारतीय सेना का मनोबल भी बढ़ा।

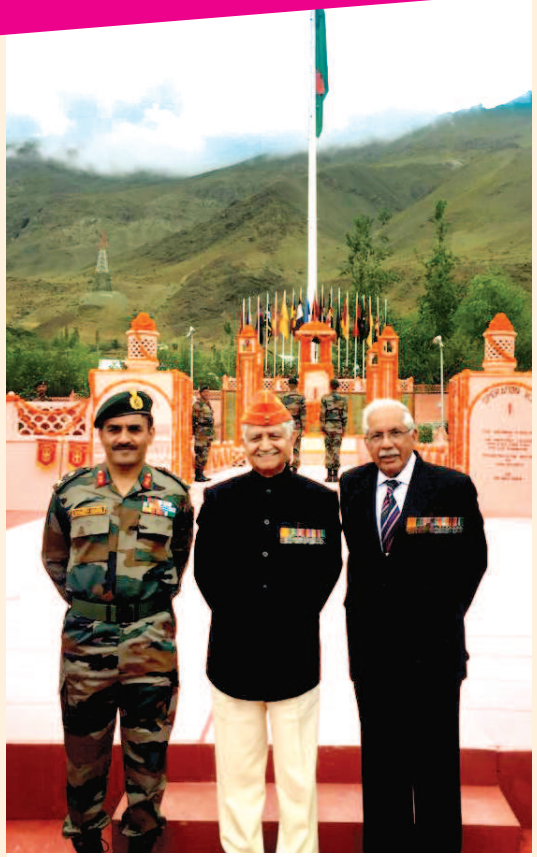

युवाओं के लिए सेना कॅरियर का सबसे बेहतर विकल्प

किताब पढ़ने व गोल्फ खेलने के शौकीन लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी कहते हैं कि अनुशासन सेना सिखाती है और अनुशासित युवा ही देश को तरक्की की राह पर अग्रसर कर सकते हैं। युवा अपनी योग्यता के अनुसार सैनिक, अधिकारी बनकर देश के लिए अपना योगदान दे सकते हैं।

लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी ने अपनी किताब कारगिल टर्निंग टाइड में अपने अनुभव और करगिल की घटनाओं का जिक्र किया है।

लेफ्टिनेंट जनरल मोहिंदर पुरी अब अपना अधिकांश समाज सेवा में सक्रिय रहकर बिता रहे हैं, साथ ही अपने सैन्य अनुभव से युवाओं को मार्गदर्शन भी प्रदान कर रहे हैं। समाज सेवा में इनकी धर्मपत्नी प्रीता भी इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं।

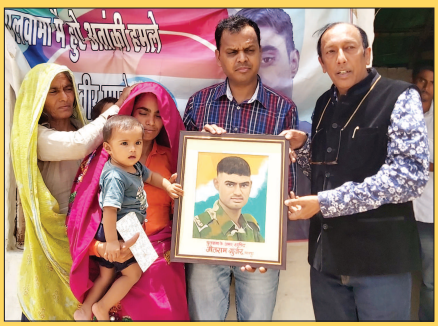

पुलवामा हमले में शहीद जीतराम गुर्जर के परिवार को शहीद का तैल चित्र भेंट करते चित्रकार चन्द्रप्रकाश गुप्ता, समाज सेवी सुधीर माथुर व माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

सफलतम एक वर्ष अब द्वितीय वर्ष का सफर है जारी...

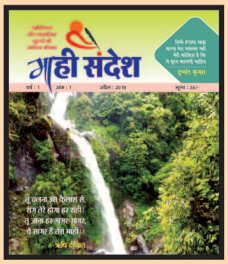

अप्रेल, 2018

मई, 2018

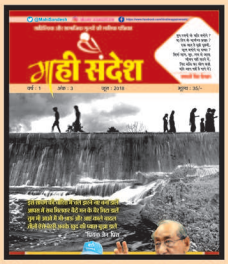

जून, 2018

जुलाई, 2018

अगस्त, 2018

सितम्बर, 2018

अक्टूबर, 2018

नवम्बर, 2018

दिसम्बर, 2018

जनवरी, 2019

फरवरी, 2019

मार्च, 2019

अप्रेल, 2019

मई, 2019

जून, 2019

जुलाई, 2019

बेहद कम समय में देश और विदेश में लोकप्रिय हो रही मासिक पत्रिका माही संदेश के बाल विशेषांक के लिए लेखन सामग्री आमंत्रित है।

जल्द आ रहा है माही संदेश मासिक पत्रिका का बाल विशेषांक

अपनी रचनाएं फोटो व अपने पूर्ण पते के साथ

ईमेल करें : mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल एंड व्हाट्सएप: 9887409303

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें

प्रेषक :

संपादक (माही संदेश)

50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान) । मो. 9887409303

सेवा में,

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**